अप्रैल (द्वितीय) 2020 | ₹ 30.00

# चंपक

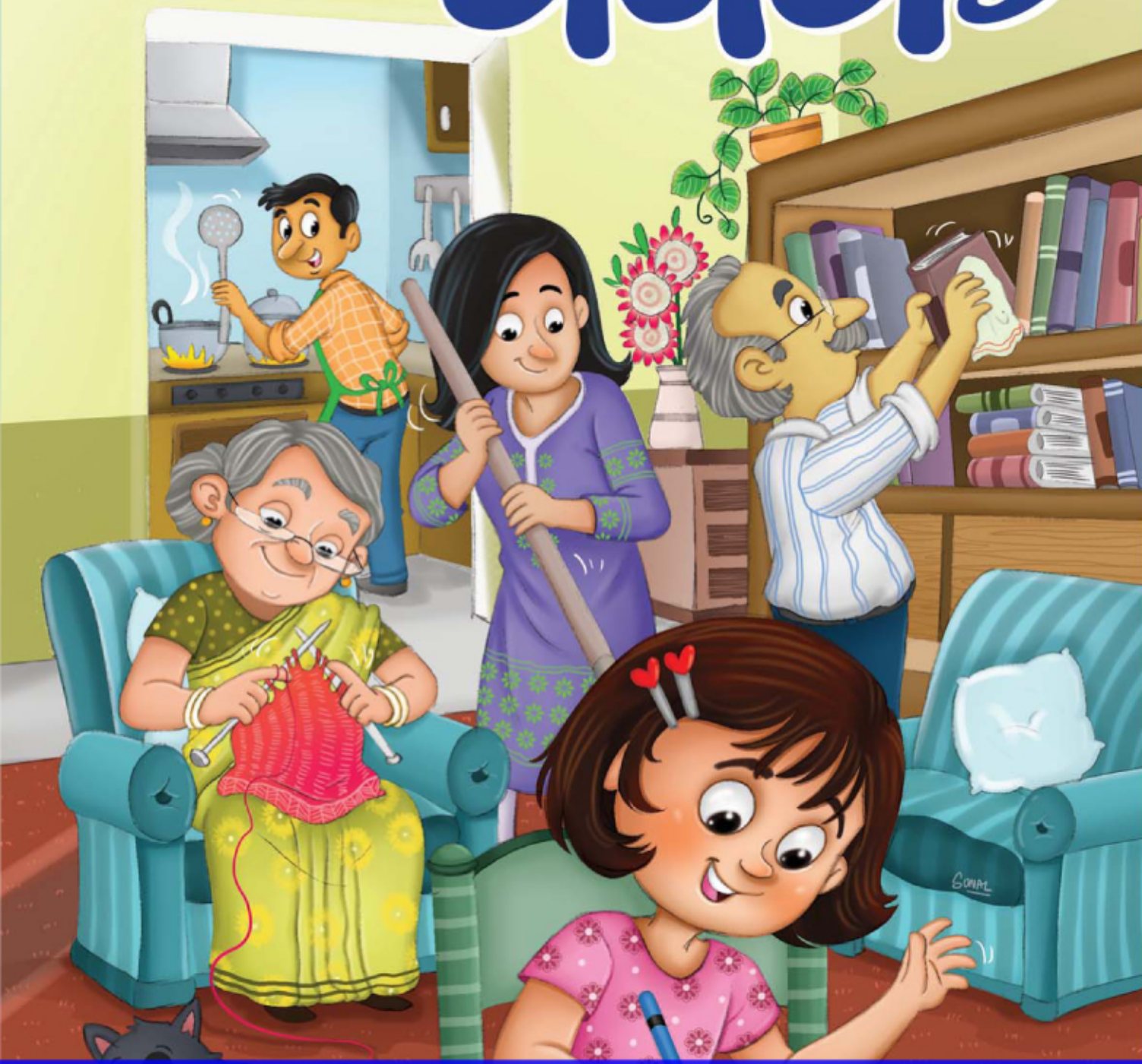

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

# HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

**If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.**

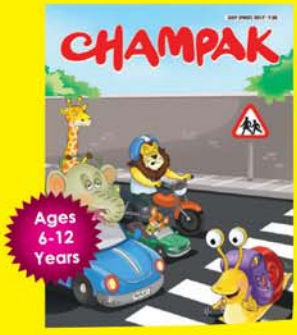


**India's largest read children's magazine**

**America's leading children's magazine in now is India!**

**America's leading early childhood magazine is now in India!**

**To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in**

# चंपक

अंक : 1187

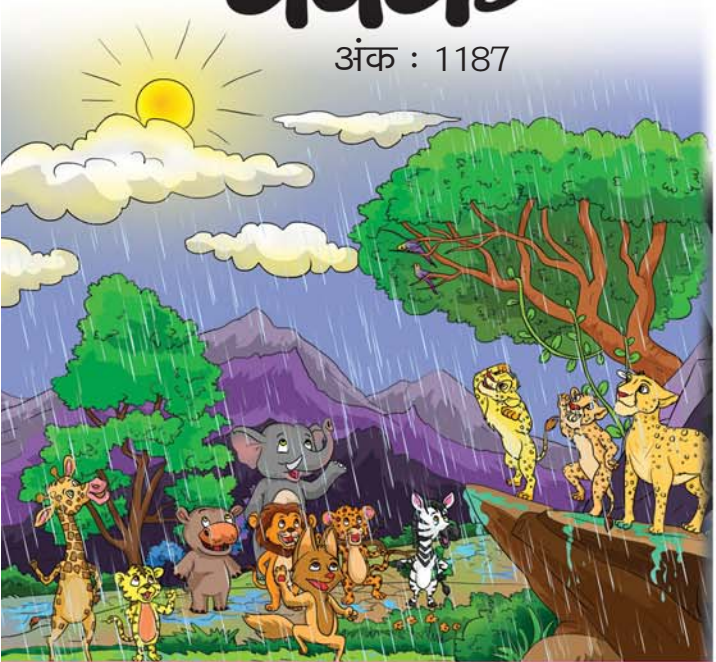

संस्थापक
**विश्वनाथ**
1917–2002

## सुनो कहानी


| | |
|---|---|
| मीकू की पढ़ाई | 4 |
| उफ ये पसीना | 9 |
| अपना हाथ जगन्नाथ | 14 |
| कहानी का चांद | 21 |
| चोरी का राज | 30 |
| उड़ान हो जाए | 36 |
| रिची ने जीता दिल | 47 |


## मुखपृष्ठ

कोरोना वायरस के कारण हुए लौकडाउन के दौरान हम ने घर पर काफी समय बिताया. आप ने इस समय को कैसे बिताया? अपनी कहानियां हमारे साथ साझा करें.

## मन बहलाओ


| | |
|---|---|
| सुंदर रंग भरो | 7 |
| रास्ता बताओ | 8 |
| देखो हंस न देना | 12 |
| मैथमैटिक मीकू | 20 |
| बिंदु मिलाओ | 25 |
| बताओ तो जानें | 28 |
| विश्व विरासत दिवस | 29 |
| चित्र पूरा करें | 33 |
| स्मार्ट | 34 |
| विश्व पृथ्वी दिवस | 44 |
| अंतर बताओ | 45 |


## चित्र कथाएं


| | |
|---|---|
| डमरू और शास्त्रीय गायिका लारा | 13 |
| चीकू | 26 |
| दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस | 40 |


## विशेष पृष्ठ


| | |
|---|---|
| मजेदार विज्ञान | 19 |
| नन्ही कलम से | 42 |


**संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ**

**संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :**
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
**Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.**

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 ( बिना सीडी के ),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. ( भारत में )

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
टौल फ्री नं. 18001038880(सोम. से शनि सुबह 10बजे से शाम के 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

# मीकू की पढ़ाई

कहानी ● मनोज राय

‘‘उफ, आज पता नहीं क्यों, पढ़ाई में एकदम मन नहीं लग रहा है,’’ मीकू चूहे के मुंह से निकला. वह सुबहसुबह ही पढ़ने के लिए उठ गया था. लेकिन लाख कोशिश के बावजूद उस से पढ़ाई नहीं हो पा रही थी.

‘लगता है मैं रात को ठीक से सोया नहीं,’ उस ने सोचा. ‘लेकिन मैं तो रात 10 बजे ही सो गया था यानी मैं 8 घंटे से अधिक सो चुका हूं. और 8 घंटे की नींद तो काफी होती है.’

‘मुझे थोड़ी देर कुछ दूसरा काम करना चाहिए. फिर जा कर पढ़ने बैठूंगा. तब मन भी बहल जाएगा,’ उस ने खुद से कहा.

वह घर में ही चहलकदमी करने लगा. लेकिन जल्द ही बोर हो गया. अब उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

‘क्यों न थोड़ी देर टीवी देख लूं,’ उस ने सोचा और कुछ देर कार्टून फिल्म देखने लगा. लेकिन उसे पढ़ाई की भी चिंता हो रही थी. सो उस ने कुछ ही देर बाद टीवी भी बंद कर दिया. उस ने फिर से अपनी किताब खोली.

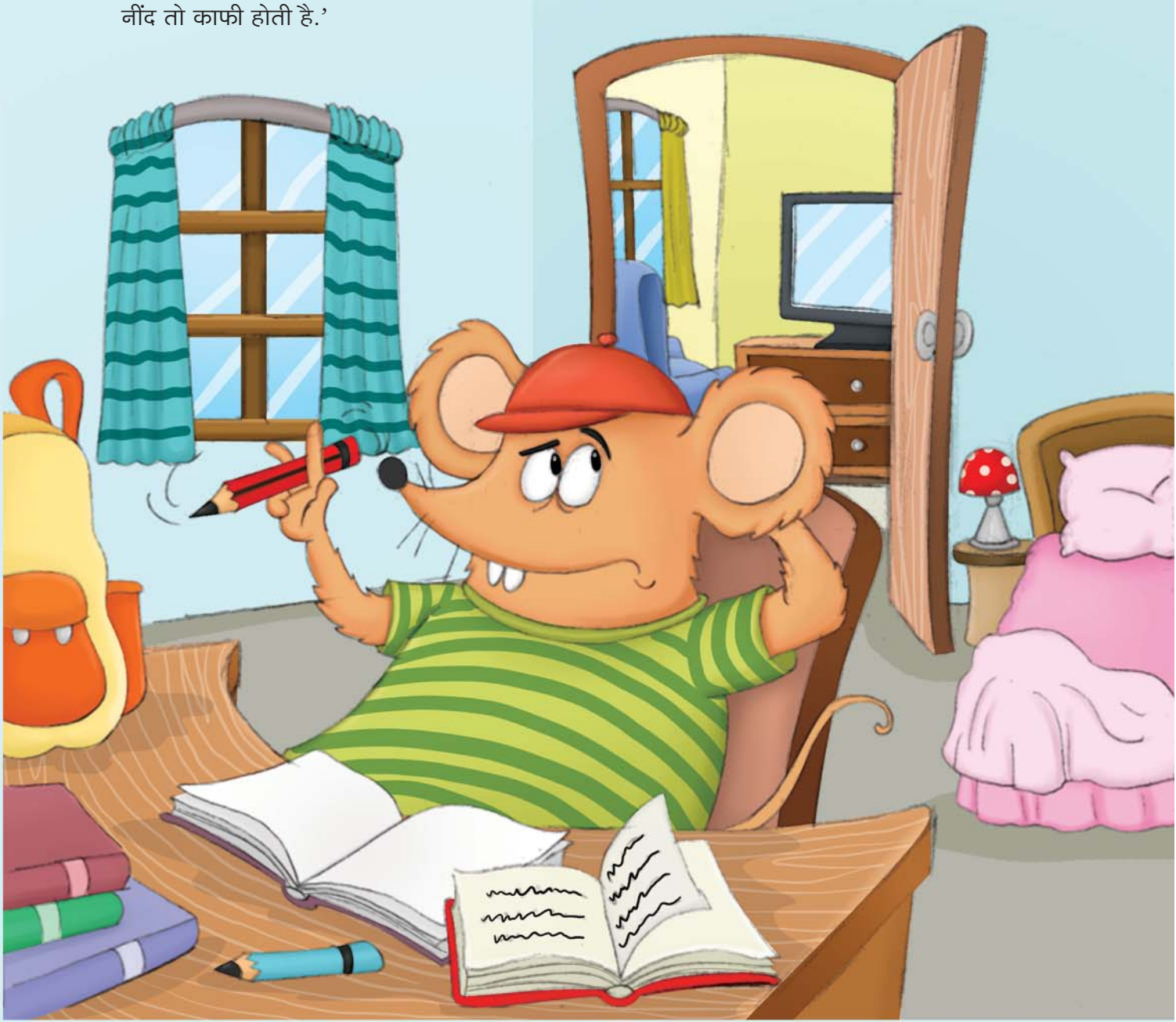

मीकू का काफी सारा होमवर्क करना बाकी था. लेकिन पढ़ाई में मन न लगने के कारण वह परेशान था.

'ऐसे काम नहीं चलेगा. क्यों न मैं अपने किसी दोस्त की मदद लूं,' इस तरह उस के मन में पप्पू गिलहरी, किट्टी बिल्ली, रूबी मैना, चीकू खरगोश जैसे दोस्तों के नाम आए.

'मैं चीकू खरगोश के पास जाता हूं. वह काफी बुद्धिमान है. वह जरूर मेरी मदद करेगा,' यह सोचते हुए मीकू अपनी किताब व कौपी के साथ चीकू से मिलने निकल गया.

''अरे मीकू, अच्छा हुआ तुम आ गए,'' चीकू ने उस का स्वागत किया. लेकिन जब उस की नजर मीकू की किताबों पर पड़ी, तो वह चौंक गया.

''तुम अपनी किताबकौपी के साथ आए हो. कोई खास काम है क्या?''

''हां, मैं बड़ी मुसीबत में हूं. मुझे तुम्हारी मदद चाहिए.''

मीकू बोला, ''यार, मैं बारबार पढ़ाई में मन लगाने की कोशिश कर रहा हूं, पर मन नहीं लग रहा. इतना होमवर्क पड़ा हुआ है. पता नहीं उसे मैं कैसे पूरा करूंगा?''

मीकू की बात सुनते ही चीकू बोला, ''पहले तुम आराम से बैठो. मम्मी ने आलू के परांठे बनाए हैं, उन्हें खाओ. फिर तुम्हारे होमवर्क के बारे में सोचते हैं.''

''परांठे तो वाकई बहुत स्वादिष्ठ थे,'' मीकू ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा. '' अब बताओ, मैं अपना होमवर्क कैसे पूरा करूं?''

''तुम बेकार टेंशन ले रहे हो. यह कोई बड़ी बात नहीं है. बस, तुम्हें समय का सदुपयोग करना होगा,'' चीकू ने उसे समझाया.

''मैं बताता हूं कि तुम अपना होमवर्क कैसे पूरा कर

सकते हो. तुम हर सुबह 3 घंटे का समय निकालो. उन 3 घंटों को तुम लौक कर सकते हो. तब तुम्हें कोई डिस्टर्ब नहीं करेगा.''

''लौक मतलब,'' मीकू की कुछ समझ में नहीं आया.

''मतलब जैसे कि हमारी अलगअलग क्लास होती हैं, गणित, विज्ञान, इतिहास. बिलकुल उसी तरह जैसे हम गणित की क्लास में सिर्फ गणित ही पढ़ते हैं, विज्ञान की क्लास में सिर्फ विज्ञान. उसी तरह से इस लौक क्लास में भी तुम सिर्फ पढ़ाई ही करोगे. चाहे कुछ भी हो जाए. उन 3 घटों में दूसरा और कोई काम नहीं करोगे.''

''अगर कोई जरूरी काम आ गया तो?'' मीकू ने जानना चाहा.

''वैसे अगर बहुत जरूरी काम हो, तो अलग बात है. लेकिन तुम्हारा पूरा जोर पढ़ाई करने पर ही होगा,'' चीकू ने उसे समझाया.

''समझ गया. मुझे पता चल गया है कि मैं कहां गलती कर रहा था. मैं एक ही बार में सभी काम करने की कोशिश कर रहा था. लेकिन अब मैं अपनी पढ़ाई को प्राथमिकता देते हुए पहले उसे ही पूरी करने की कोशिश करूंगा. तुम्हारा शुक्रिया चीकू,'' मीकू ने मुसकराते हुए कहा.

''अरे, इस में शुक्रिया कहने की क्या बात है. एक दोस्त ही तो दूसरे के काम आता है,'' चीकू भी मुसकरा दिया. ●

# सुंदर रंग भरो

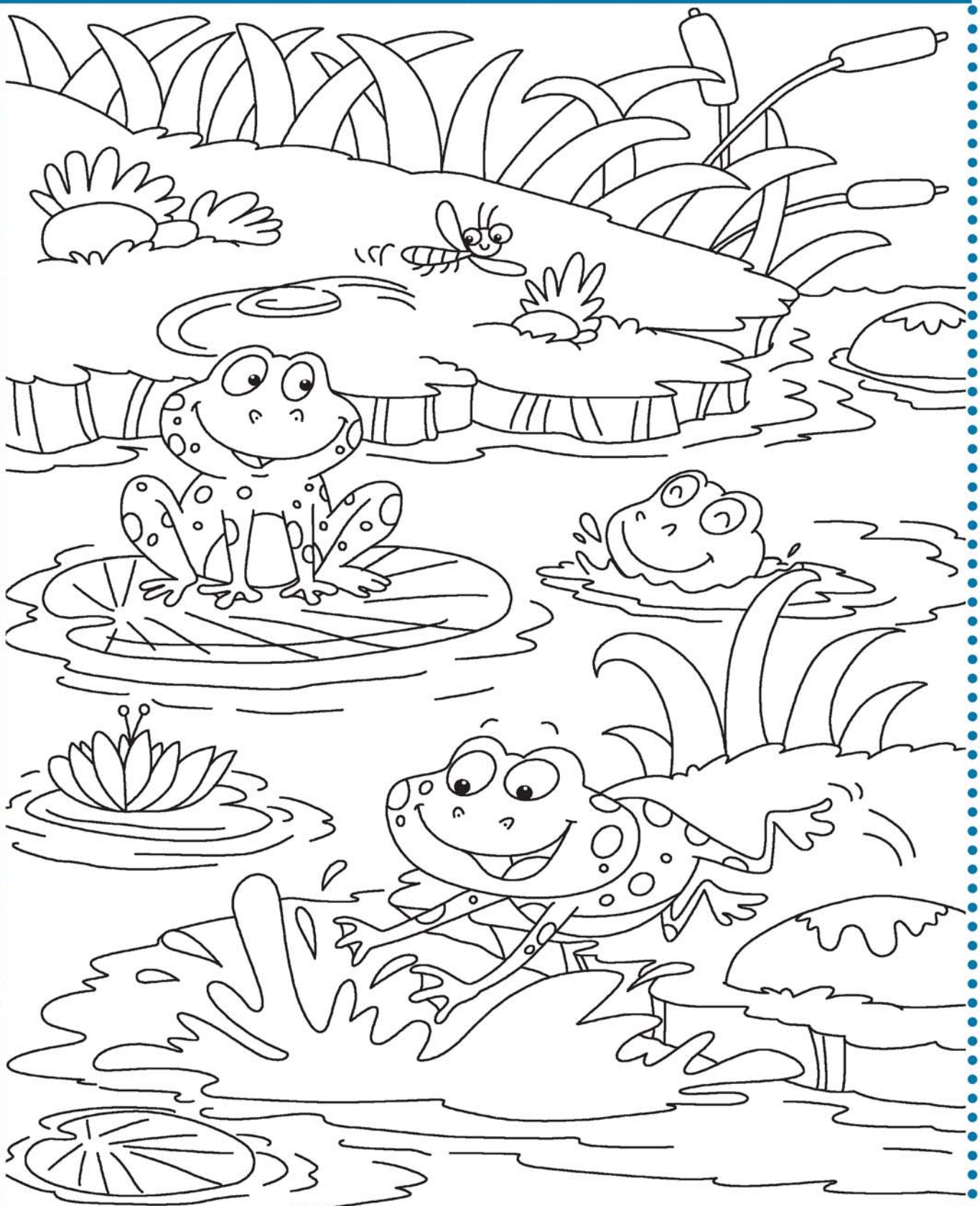

# रास्ता बताओ

लाइब्रेरियन को किताबों को 5 श्रेणियों में रखना है जैसे कथा साहित्य, कथेतर साहित्य, विज्ञान, पुरातत्त्व विज्ञान, भूगोल, जीवनचरित. किताबें इन्हीं शैल्फ पर रखनी हैं, कथा साहित्य से शुरुआत कीजिए और लाइब्रेरियन की किताबों और डैस्क तक जाने में मदद कीजिए.

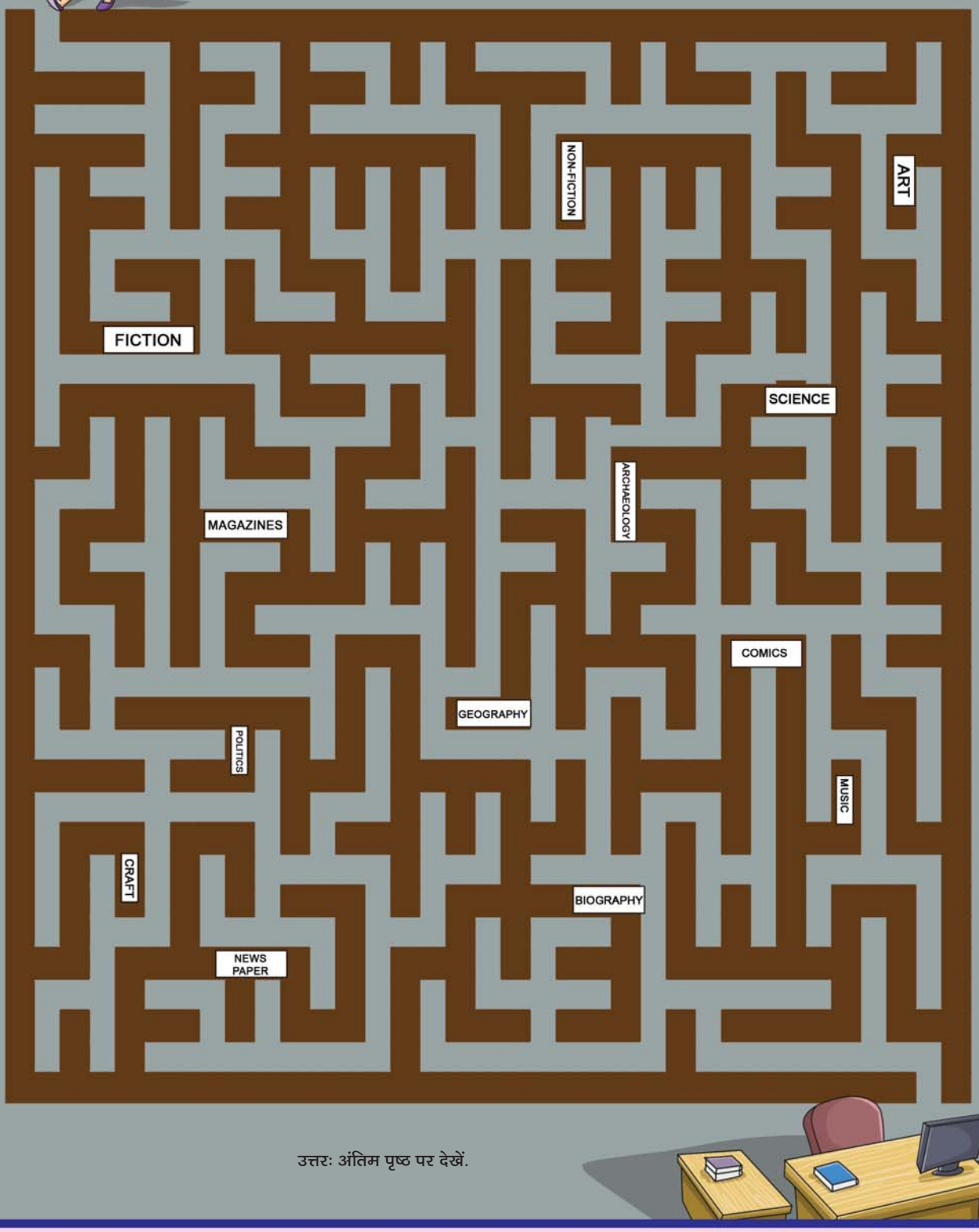


उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

# उफ ये पसीना

कहानी ● कुसुम अग्रवाल

क्वारंटाइन उपायों के साथ लौकडाउन में होने के बाद आंदोलन पूरे जीरों पर था. मीनू अपने चचेरे भाईबहनों की आवभगत के लिए सजधज कर तैयार थी कि मां ने देखा घर में नीबू नहीं थे.

इतनी गरमी में दूर से यात्रा कर के आए चचेरे भाईबहनों को मां शिकंजी या नीबू पानी पिलाना चाहती थीं. उन्होंने मीनू को कुछ पैसे दिए और कहा, ''मीनू जाओ, पास की दुकान से आधा दर्जन नीबू ले आओ.''

मां के कहने पर मीनू नीबू लाने चली गई. बाहर बहुत तेज धूप थी. इसलिए थोड़ी देर बाद जब मीनू घर लौटी तो पसीने से उस के कपड़े भी तरबतर हो गए थे.

यह देख कर मीनू मां पर गुस्सा हो कर बोली, ''मां, मुझे इतनी गरमी में बाहर भेज दिया. देखो, पसीने के कारण मेरी पूरी ड्रैस भी खराब हो गई है. अच्छीखासी तैयार हुई थी,'' कह कर वह गुस्से में बड़बड़ाती हुई अपने कमरे में चली गई और एसी चला कर कपड़े बदलने लगी.

मां कुछ नहीं बोलीं क्योंकि वे जानती थीं कि मीनू को बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है.

उस के चचेरे बहनभाई अपने मातापिता के साथ आ गए. मीनू और उस की मां उन से मिली और बातचीत करने लगीं.

सभी ड्रांइनरूम में बैठ गए, लेकिन वहां एसीकूलर कुछ भी नहीं था. अतः मीनू की मां उन से बोली, आइए, ''आप लोग अंदर के कमरे में बैठ जाइए. वहां एसी चल रहा है. आप को गरमी नहीं लगेगी और आरामदायक रहेगा.''

''दीदी, गरमी का मौसम है. गरमी तो लगेगी ही. परंतु हमें तो हर मौसम को सहन करने की आदत है. फिर हमारे घर में तो एसी है ही नहीं. केवल एक कूलर है. वह भी कम ही चलता है क्योंकि 4 बालटी पानी भरो तब जा कर वह कमरा ठंडा करता है. बाप रे, इतना पानी नहीं है हमारे पास,'' उन्होंने कहा.

यह बात सुन कर मीनू हैरान रह गई. वह बोली, ''आप लोगों को गरमी नहीं लगती क्या? मैं तो थोड़ी देर भी यदि बिना एसीकूलर के रहती हूं तो पसीनापसीना हो जाती हूं. मेरी तो हालत खराब हो

जाती है. अभी देखो ना मैं थोड़ी देर के लिए ही बाहर गई थी जिस में पूरी पसीने से भीग गई. मुझे पसीने में भीग कर बिलकुल अच्छा नहीं लगता.

''अच्छा तो मुझे भी नहीं लगता,'' अकंल ने कहा. ''परंतु मीनू क्या तुम्हें पता है पसीना बहाना हमारे शरीर के लिए बहुत अच्छा होता है,'' उस ने पूछा.

मीनू हैरान हो गई, ''अंकल, पसीना बहाना भला हमारे लिए कैसे अच्छा हो सकता है. इस से तो बड़ी परेशानी होती है. कईयों के पसीने से तो बहुत बदबू भी आती है. उन के तो पास बैठने का ही मन नहीं करता.''

मीनू की बात सुन कर आंटी बोलीं, ''बेटी, हमें पसीना आने से थोड़ी असुविधा भले ही होती है परंतु यह हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है.''

अंकलआंटी की बातें उन के साथ आए उन के दोनों बच्चे भी सुन रहे थे तथा मीनू के साथसाथ वे भी हैरान हो रहे थे. उन में से एक बच्चा बोला, ''पापा, भला पसीना हमारे स्वास्थ्य के लिए कैसे लाभदायक हो सकता है?''

''अरे वाह, तुम सब को नहीं पता? चलो, मैं समझाता हूं,'' अंकल ने कहा.

पसीने के साथ हमारे शरीर के कई विषैले पदार्थ भी बाहर निकलते हैं, जिस से हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है, पसीना आने से हमारी त्वचा साफ हो जाती है जिस से मुंह पर कीलमुंहासे आदि नहीं निकलते तथा त्वचा पर निखार भी आता है. एक मजे की बात बताऊं. पसीना आने से हमारा वजन भी घटता है. खून का बहाव अच्छा रहता है जिस से हमारा मस्तिष्क भी तरोताजा हो जाता है. हमारे शरीर का तापमान भी संतुलित रहता है.

MANIMALA JEEVA

मीनू अंकल की बातें सुनसुन कर हैरान हो रही थी. उस ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि पसीना आने के भी लाभ हो सकते हैं.

''अच्छा, इस बातचीत को यहीं खत्म करो. आओ, अब कुछ खाते हैं,'' मां ने कहा. उसे याद आया कि वह बच्चों के लिए आइसक्रीम लेना भूल गई थी मां ने मीनू की ओर देखा पर फिर कुछ सोच कर बोलीं, ''नहींनहीं, रहने दो. बाहर बहुत गरमी है. जाने वाले की हालत खराब हो जाएगी.''

मां की बात सुन कर मीनू बोली, ''मां, मैं ले आती हूं आइसक्रीम. गरमी के मौसम में ही तो आइसक्रीम खाने का मजा है,'' कह कर वह अपनी मां से पैसे ले कर आइसक्रीम लने चली गई.

कुछ ही देर बाद वह आइसक्रीम ले आई और फिर चचेरे भाईबहनों को आइसक्रीम परोसने में मां की मदद करने लगी.

धूप में जा कर आइसक्रीम लाने, बारबार रसोई में आनेजाने तथा बिना एसीकूलर के रहने में उसे थोड़ा पसीना आ रहा था मगर फिर भी वह चिड़चिड़ी नहीं हो रही थी, क्योंकि उसे पता था कि इस में उस का कुछ नुकसान नहीं होगा बल्कि फायदा ही होगा. साथ ही वह यह सोच रही थी कि प्रकृति में हर मौसम का अपना अलग महत्त्व होता है अतः हमें हर मौसम का आनंद उठाना चाहिए न कि उस बदलाव से परेशान होना चाहिए. ●

# देखो हंस न देना

**पूर्वी (सन्नी से) :** एक पेड़ पर बहुत से तोते बैठे हैं. एक सैकंड में उन्हें कैसे कैप्चर करोगे?
**सन्नी :** उन के ऊपर एक बड़ा सा जाल फेंक देंगे.
**पूर्वी :** नहीं, उन की एक फोटो खींच लेंगे.

**पूर्वी ताहिलियानी, 8 वर्ष**
चैन्नई

**टीचर (छात्र से) :** तुम इतनी देर से स्कूल क्यों आए?
**छात्र :** एक आदमी था जिस का 100 रुपए का एक नोट खो गया था.
**टीचर :** क्या तुम नोट ढूंढ़ने में उस की मदद कर रहे थे?
**छात्र :** नहीं, मैं नोट के ऊपर खड़ा था.

**अर्जुन बडिगर, 11 वर्ष**
नई दिल्ली

**(मनास एक उभरता हुआ अभिनेता था जबकि करन एक प्रसिद्ध अभिनेता था.)**
**मनास :** करन, मेरे बहुत से फैन्स हैं.
**करन :** अच्छा यह बात है. अगर तुम्हारे फैन्स हैं, तो मेरे पास एयर कंडिशनर्स हैं.

**रिजवान मंसूरी, 11 वर्ष**
नई दिल्ली

**टीचर (काजल से) :** तुम फ्लोर पर क्या कर रही हो?
**काजल :** क्योंकि आप ने कहा था कि इस मैथ प्रौब्लम को बिना टेबल के हल करना.

**प्रतीक सिंह, 9 वर्ष**
गुजरात

## हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

**सुमन (कमल से) :** कौन सी 2 कीज दरवाजे को नहीं खोलतीं?
**कमल :** डंकी और मंकी.

**नित्या उदय अंचन, 8 वर्ष**
मुंबई

**चिराग (उदय से) :** तुम्हारे पास 10 मछलियां हैं. उन में से 5 डूब गईं. 3 मछली फिर वापस जिंदा आ गईं. अब तुम्हारे पास कितनी मछलियां बचीं?
**उदय :** 8 मछलियां.
**चिराग :** गलत, मछलियां कभी डूबती नहीं हैं.

**श्रीमानश्रीकर टी, 10 वर्ष**
केरल

**किट्टी (चिंटू से) :** एक आदमी 25 मंजिला बिल्डिंग की खिड़कियों की सफाई कर रहा था. वह फिसला और सीढ़ी से गिर गया लेकिन वह घायल नहीं हुआ. यह कैसे हुआ होगा?
**चिंटू :** वह सीढ़ी के दूसरे चरण से गिरा था.

**शिवानी इखे, 9 वर्ष**, कोलकाता

**टीचर (सतीश से) :** तुम ने अनूप के पेपर की नकल की है, है न?
**टीचर :** आप को कैसे पता चला?
**टीचर :** अनूप ने पेपर में लिखा कि मैं नहीं जानता और तुम ने भी लिखा कि मैं भी नहीं जानता.

**भक्ति, 7 वर्ष**, मुंबई

**ग्राहक (वेटर से) :** देखो, मेरे सूप में एक छोटी सी मक्खी पड़ी हुई है.
**वेटर :** चिंता न करें, कुछ नहीं होगा.
**अगले दिन**
**ग्राहक :** वेटर, देखो, मेरे सूप में मकड़ी गिरी हुई है.
**वेटर :** ओहो सर, लगता है, आज मक्खियां हड़ताल पर चली गई हैं.

**विवेक वर्धन, 11 वर्ष**, मंडावली, दिल्ली

**प्र. :** 2 आदमी शतरंज खेल रहे थे. उन्होंने 5 गेम्स खेले. हरेक ने 3 गेम कैसे जीते?
**उ. :** वे एकदूसरे के लिए नहीं खेल रहे थे.

**आरना सिंह, 6 वर्ष**, मुंबई

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 9619587613**
औनलाइन विजिट करें :
**www.facebook.com/ChampakMagazine**
**https://www.youtube.com/ChampakSciQ**

# डमरू और शास्त्रीय गायिका लारा

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू को गायिका लारा लोमड़ी के यहां काम मिला.

डमरू, क्या तुम जानते हो, मैं शास्त्रीय गायिका हूं?

मालकिन, इस का क्या मतलब है?

डमरू, एक शास्त्रीय गायक सामान्य गायकों से अलग होता है.

वह कैसे मालकिन?

SONAL

अच्छा, तो यह बात है.

शास्त्रीय गायक म्यूजिकल नोट्स यानी सूरों को लंबे खींचता है जो सामान्य गायकों के लिए संभव नहीं है.

हां, अब मेरी हारमोनियम को उठाओ और इसे सावधानी से वहां रख दो. कल मेरा एक संगीत समारोह है.

मालकिन, यह हारमोनियम क्या है?

अगले दिन लारा ने देखा कि डमरू हारमोनियम की सभी चाबियों को खींच रहा था.

बेवकूफ, इस में म्यूजिकल नोट्स होते हैं. हम इसे बजाते और गाते हैं.

मालकिन, आप ने बताया था कि शास्त्रीय गायक नोट्स को लंबे खींच सकता है. मैं ने सोचा कि मुझे भी नोट्स खींचने की कोशिश करनी होगी.

डमरू, तुम चाबियों को क्यों खींच रहे हो? तुम ने मेरे वाद्ययंत्र को बरबाद कर दिया.

मैं हारमोनियम की चाबियों को नहीं खींचती हूं. संगीत की धुनों को खींचा जाता है आज मेरा एक संगीत समारोह है. तुम ने सबकुछ बरबाद कर दिया. भाग जाओ यहां से.

मालकिन, इतनी जोर से मत चिल्लाइए. आज आप को म्यूजिक के नोट्स खींचने हैं.

मैं बरबाद हो गई हूं. अब मैं कौन सा वाद्ययंत्र बजाऊंगी और कैसे गाऊंगी?

# अपना हाथ जगन्नाथ

कहानी ● पूनम मेहता

‘‘ओफ कितनी गरमी है. मां, बारिश कब होगी,’’ मीशा चीता से बच्चों ने पूछा.

आनंदवन में गरमी और उमस से जानवरों का बुरा हाल था. पशुओं के सामने खानेपीने का संकट गहरा गया था. जंगल में पहले ही पानी की कमी थी. सूरज की तपिश से अब वहां सबकुछ सूख रहा था. चारों तरफ कोहराम मचा था.

दिन तो गरम थे ही, रातें भी ठंडी नहीं रहीं. पक्षियों और ज्यादा बालों वाले जानवरों की तो शामत आ गई थी.

मीशा अपने बच्चों के साथ जंगल में रहती थी. रोज आसमान में बादल उमड़तेघुमड़ते पर बिना बरसे चले जाते. बरसात के दिनों में भी पानी की एक बूंद नहीं बरसी.

राजा शेरू ने कहा, ‘‘दोस्तो, हमें मनुष्यों की हरकतों के कारण सूखे की समस्या से जूझना पड़ रहा है. इन्होंने ही जंगल की यह हालत और हम सब की स्थिति इतनी दयनीय कर दी है. यह स्थिति इंसानों की वजह से हुई है. इन्होंने हम से शक्तिशाली होने के नाते अपनी सुखसुविधाओं के लिए पेड़ काट डाले, नदियों को रोक दिया, विकिरणें फैलाईं और पृथ्वी का

नाश कर दिया है. इसीलिए यहां का मौसम ही बदल गया है. न बारिश हो रही है, न सर्दियां पड़ रही हैं, सिर्फ गरमी का साम्राज्य है. पेड़ों पर खाने को फल नहीं हैं.''

''इंसानों को खत्म कर दिया जाए, इंसान मुर्दाबाद,'' नफरत से फौक्सी भेड़िया बोला. उस के पीछे सभी ने हुंकार भरी ''मुर्दाबाद मुर्दाबाद.''

''शांत रहिए.'' राजा शेरू की दहाड़ गूंजी और सभी चुप हो गए. ''हम ने तय कर लिया है कि रात को हम जंगल से सटे इलाकों में इंसानों के घर पर हमला बोलेंगे और उन का खानापानी ले आएंगे. उन्हें भी तो पता चले कि किसी का भोजनपानी छीनना क्या होता है.''

सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से राजा की

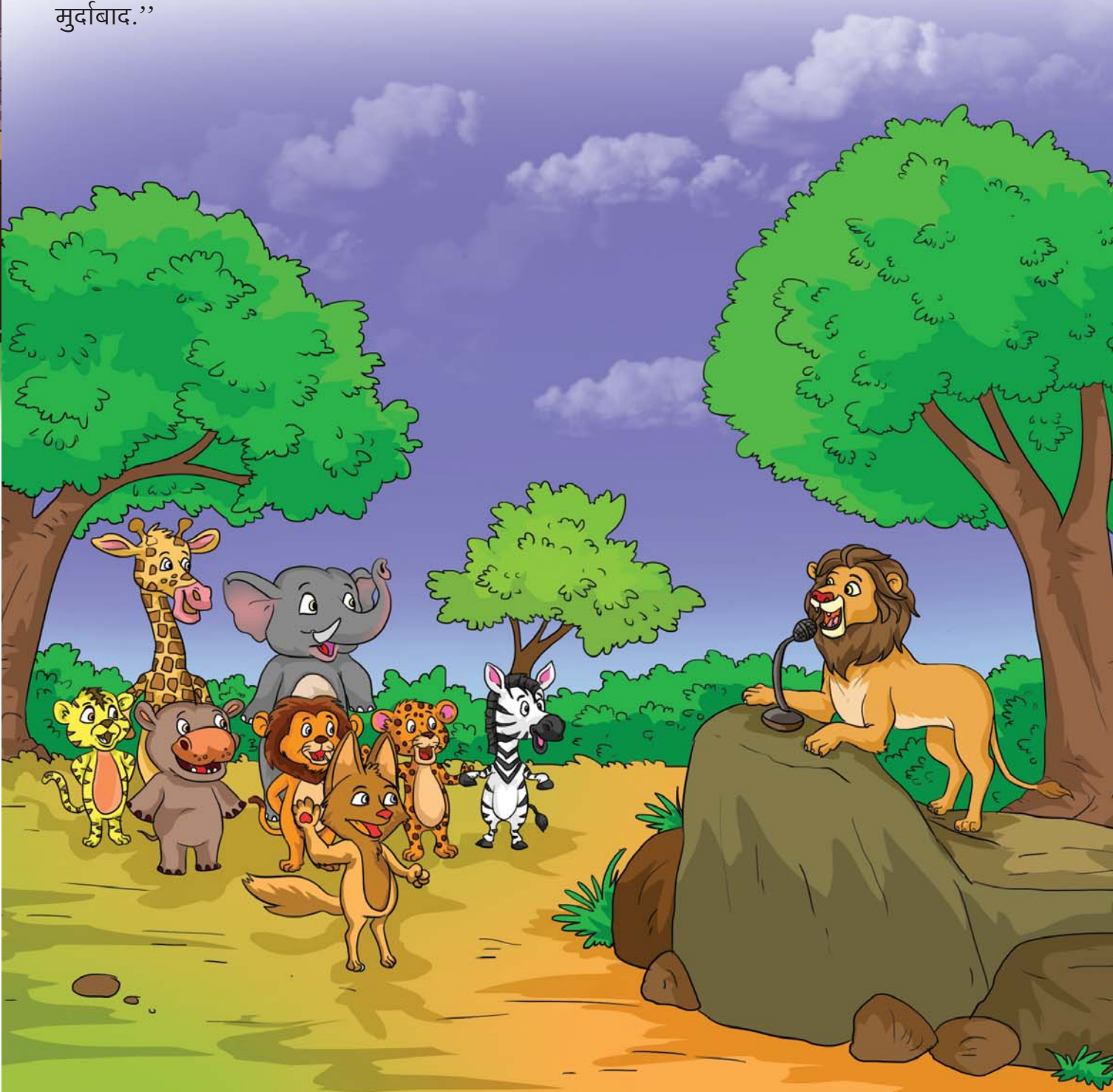

बात का स्वागत किया. सभी को अब रात होने का इंतजार था. शेर, भालू, भेड़िया, चीता, जंगल की सीमा से निकले और गांवों तक गए.

इंसानों की सुरक्षा व्यवस्था के चलते वे एकदो शिकार ही कर पाए. कुछ जगहों पर तो कैद होतेहोते वे बड़ी मुश्किल से बचे. जंगल में खबर फैल गई कि योजना फेल हो गई है.

राजा शेरू ने दोबारा सभा बुलाई. जिन लकड़बग्घों को लोगों ने पीटा था. वे डरेसहमे खड़े थे.

‘‘जंगल के निवासियो, हमें डरना नहीं है. डट कर मुकाबला करना है, अस्तित्व की लड़ाई में,’’ राजा शेरू आगे बोलते इस से पहले मीशा बोल उठी, ‘‘आज्ञा हो तो मैं कुछ सुझाव दूं?’’

मीशा की जंगल में साख थी. छोटेबड़े सभी उस का आदर करते थे.

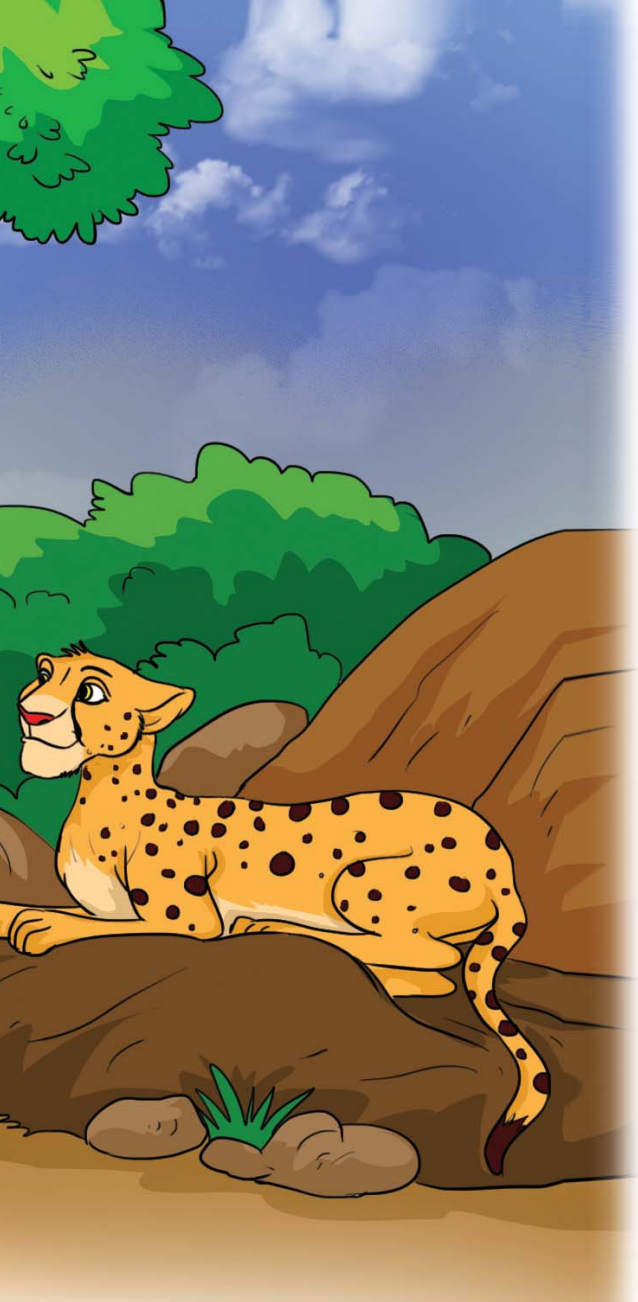

राजा ने आज्ञा दी तो उस ने बोलना शुरू किया, ‘‘साथियो, हमारी लड़ाई इंसानों से नहीं है, बल्कि उन के किए हुए कामों से है. विज्ञान का सहारा ले कर जो प्रकृति का अनुचित दोहन उन्होंने किया है उसी के कारण यह संकट खड़ा हुआ है. पृथ्वी और गरम होती जा रही है. ग्लेशियर पिघल रहे हैं, पर केवल हम ही नहीं, मनुष्य भी इस पीड़ा को भुगत रहा है. कुछ सालों बाद उस के खुद के पास खानापानी नहीं बचेगा,’’ सभी दम साधे मीशा की बात सुन रहे थे.

‘‘इंसानों पर हमला करेंगे तो हम बचेंगे, क्योंकि वे हम से ज्यादा शक्तिशाली हैं,’’ सभी ने सहमति में सिर हिलाया. खासतौर से पिटे हुए लकडबग्घों ने.

‘‘तुम्हारे पास इस समस्या का कोई हल है, मीशा?’’ राजा ने पूछा, ‘‘है तो सही पर थोड़ा लंबा और मेहनत का काम है,’’ मीशा ने उत्तर दिया.

‘‘बताओ, हम अवश्य करेंगे,’’ सभी जानवर बोले.

‘‘हम पानी और खाने की तलाश में इंसानों की बस्तियों में जाते हैं तो क्यों न उसे यहीं उगाएं, पर इस में सभी का सहयोग चाहिए होगा, परिणाम आने तक धैर्य भी बनाए रखना होगा.’’

अगली सुबह जंगल में बीज डालने, खाली स्थानों पर निराईगुड़ाई करने काम शुरू हुआ.

सभी जानवरों व पक्षियों ने अपने गुणों के अनुरूप कार्य किया. एकदूसरे की मदद की.

उमस और गरमी से बेहाल लोगों को मीशा के प्लान से चमत्कार की उम्मीद थी. इंसानों के इलाके में घुस कर वे देख चुके थे. दिन बीते, हफ्ते बीत गए. न गरमी कम हुई, न भोजन टपका. मीशा के इरादों पर अब सभी को संदेह होने लगा था.

इतनी मेहनत व्यर्थ करवाई. इस से तो चुरा कर खाना ले आते, अच्छा रहता. आनंदवन के निवासी उस दिन बेहद हताश थे. उन्होंने समूह

में मनुष्य पर आक्रमण करने की योजना बनाई और राजा शेरू से मिलने चल दिए.

गुफा तक पहुंचे ही थे कि बिजली कड़की. पूरा आनंदवन रोशनी से नहा गया. गरज के साथ छींटे पड़ने शुरू हो गए. जहां बीज डाले थे, उन में छोटीछोटी कोपलें उग आईं.

आनंदवनवासियों की पानी की समस्या खत्म हो गई. नए पौधों के उगने से खाने की मुश्किल भी कम होने लगी. शाकाहारी जानवरों के पनपने और मांसाहारी जानवरों को भी भरपेट भोजन मिलने की उम्मीद जगी. मीशा की योजना ने देर से ही सही, काम कर दिखाया था.

जंगल से पलायन या इंसानों पर हमला करने से उन्हें हमेशा भरपेट भोजनपानी नहीं मिलता. 'अपना हाथ जगन्नाथ' होता है उन्हें समझ आ गया था. ●

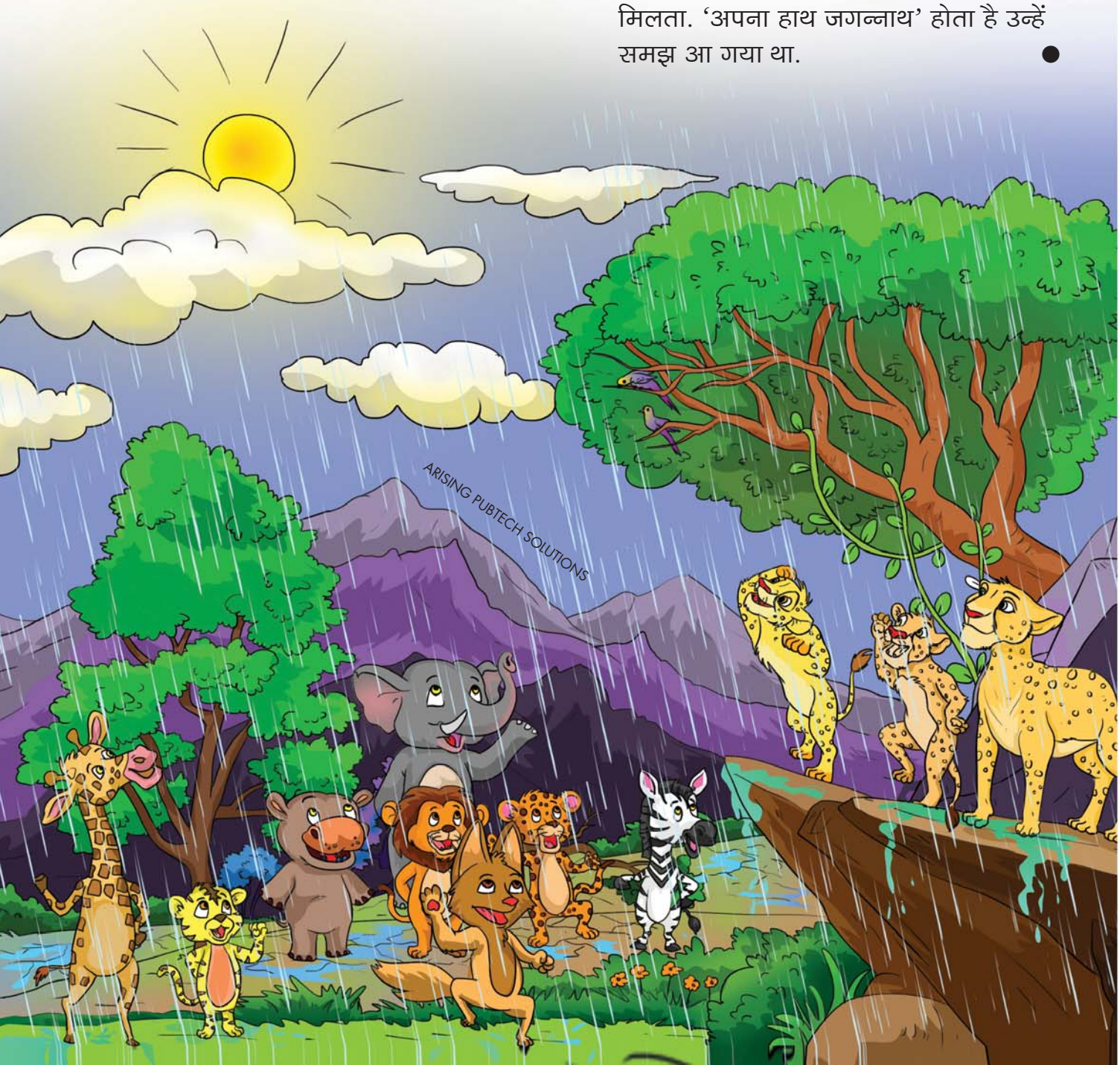

मजेदार विज्ञान

# चिपचिपा पानी

आइए, देखते हैं, पानी धागे पर बिना गिरे कैसे आगे बढ़ता है.

**आप को चाहिए :**

- पानी से भरा एक गिलास
- एक खाली गिलास
- सूती धागा

## ऐसा करें :

1. धागे को भिगो दें और निचोड़ कर अतिरिक्त पानी निकाल दें.

2. भीगे धागे के एक छोर को पानी से भरे गिलास में डूबो दें. धागे के दूसरे छोर को खाली गिलास में डाल दें.

3. पानी वाले गिलास को उठा लें और एक कोण से इसे झुका दें.

## देखें :

जब पानी भरे गिलास को झुकाया जाता है तो पानी गिलास से बाहर नहीं गिरता है. गिरने के बजाय पानी धागे के साथ चिपक कर बहते हुए खाली गिलास में चला जाता है. इस तरह से खाली गिलास भर जाता है.

## सोचें :

**पानी धागे से क्यों चिपकता है?**

पानी में कोहीसिव और अडहीसिव यानी साहचर्य और चिपचिपापन के खास गुण होते हैं. कोहीसिव का मतलब है पानी अपने अणुओं के साथ जुड़ा होता है यानी इस के अणु साहचर्य के बंधन में रहते हैं. अडहीसिव का मतलब है कि पानी के अणुओं का किसी अन्य वस्तु के अणुओं के साथ चिपकना. हमारे इस प्रयोग में जब पानी से भरे गिलास को झुकाया जाता है तो पानी के अणु धागे पर चिपक जाते हैं और बहते हुए आगे बढ़ते हैं. बहने का काम पानी के कोहीसिव गुण के कारण होता है. धागे के साथ पानी अडहीसिव गुण के कारण ही चिपकता है. पानी हाइड्रोजन और औक्सीजन के मेल से बना है. पानी के अणु में $H_2O$ यानी हाइड्रोजन के 2 अणु और औक्सीजन का एक अणु होता है, जो धन और ऋण आवेश के कारण अपने अडहीसिव गुण की वजह से चिपका रहता है तथ गिरता नहीं है और बहते हुए पानी खाली गिलास में चला जाता है.

## पता करें :

**जब वर्षा होती है तो कार के शीशे पर पानी की बूंदें कैसे बनती हैं?**

commons.wikimedia.org

जैसा कि हम ने अपने इस प्रयोग में देखा कि कोहीसिव गुण के कारण पानी के अणु एकदूसरे से चिपके होते हैं और एक बूंद की तरह दिखाई देते हैं. अडहीसिव गुण के कारण कार के शीशे के साथ चिपक कर ये पानी की बूंदें बनाते हैं, जब बारिश खत्म हो जाती है.

# मैथमैटिक मीकू

मीकू चूहे को हर चीज की गिनती करनी है. लेकिन जितनी बार वह उन की गिनती करता है, हर बार उत्तर गलत आता है. गिनती करने में आप उस की मदद करें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

# कहानी का चांद

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

राहुल ने टीवी पर समाचार देखा, विक्रम लैंडर चंद्रमा के नजदीक पहुंचा. वह चांद पर पानी की खोज के लिए गया है, यह समाचार देखते ही राहुल दादी के पास पहुंचा और बोला, ''दादी, आप ने चांद की जो कहानी मुझे सुनाई थी, वह गलत थी.''

दादी को समझ नहीं आया कि राहुल क्या कह रहा है. ''राहुल बेटा, तुम क्या कहना चाहते हो? उन्होंने पूछा.

इस पर राहुल बोला, ''दादी मां, आप ने मुझे बताया था चांद और सूरज भाईबहन हैं.''

''हां,'' दादी ने कहा, ''इस में क्या गलत है?''

''मगर, दादी, चांद और सूरज भाईबहन कैसे हो सकते हैं?'' राहुल ने कहा, ''वे तो बहुत दूरदूर रहते हैं.''

''तो क्या दूरदूर रहने से भाईबहन का रिश्ता खत्म हो जाता है,'' दादी बोलीं.

''मेरा भाई यहां से 900 किलोमीटर दूर मैसूर में रहता है. उस से मिले हुए मुझे कई साल हो गए. तो क्या वह मेरा भाई नहीं रहा?''

राहुल ने इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं दिया, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था. वह सूरजचांद को भाईबहन माने या न माने, उस ने प्रश्नवाचक दृष्टि से दादी को देखा.

दादी समझ गईं कि राहुल को कुछ समझ नहीं आ

रहा है, इसलिए दादी बोलीं, ‘‘अच्छा राहुल, यह बताओ भाईबहन किसे कहते हैं?’’

यह सुन कर राहुल हंसा, ‘‘ओह दादी, यह तो बहुत आसान प्रश्न है,’’ वह दादी के पास बैठते हुए बोला, ‘‘जो लड़कालड़की एक ही मां की संतान हों उन्हें भाईबहन कहते हैं.’’

इस पर दादी बोलीं, ‘‘जानते हो, सूरज और चांद अंतरिक्ष की पैदाइश हैं. इस कारण वे भी भाईबहन हुए. चूंकि हम धरती को माता मानते हैं इसलिए इसे धरती की संतान मानने में क्या हर्ज है?’’

‘‘मगर क्यों?’’ राहुल ने पूछा.

‘‘संतान मातापिता की सेवा करती है. मातापिता बचपन में संतान का लालनपालन करते हैं. यह सही है या गलत?’’ दादी ने राहुल से पूछा तो वह बोला, ‘‘यह बात तो सही है दादी.’’

‘‘तब यह बताओ कि यदि सूरज रोज निकलना छोड़ दे तो क्या होगा?’’

‘‘दिन नहीं निकलेगा और क्या?’’

‘‘बस.’’

‘‘हां, मुझे तो इतना ही मालूम है,’’ राहुल ने कहा.

‘‘अरे नहीं,’’ दादी बोलीं, ‘‘ऐसा नहीं होगा, यदि सूरज निकलना छोड़ दे तो पेड़पौधे बड़े नहीं हो पाएंगे, उन में फलफूल नहीं आएंगे. इस का कारण यह है कि सूरज की रोशनी से पेड़पौधे भोजन बनाते हैं. उसी की उपस्थिति में वे औक्सीजन वातावरण में छोड़ते हैं. यदि सूरज नहीं आएगा तो पेड़पौधे नहीं होंगे.’’

‘‘और पेड़पौधे नहीं होंगे तो हम खाएंगे क्या? यही कहना चाहती हो ना, दादी?’’ राहुल ने बीच में कहा.

‘‘हां, यही.’’

‘‘मगर दादी यह बताइए, आप कहती हैं कि सूरजचांद भाईबहन हैं. वे छुपनछैया खेलते हैं, ये कैसे राही हैं?’’ राहुल ने पूछा.

‘‘तुम ने रात को चांद को निकलते देखा होगा. वह कभी जल्दी निकलता है तो कभी देर से आता है. कभी छोटा होता है तो कभी पूरा होता है. यह उस की कलाएं हैं. इस की वजह से वह छोटे से बड़ा होता रहता है. इसे हम चंद्र कलाएं कहते हैं,’’ दादी ने कहा तो राहुल ने हां में गरदन हिला दी.

‘‘चंद्रमा पृथ्वी के चक्कर लगाता है. सही है न?’’

‘‘हां दादी,’’ राहुल बोला, ‘‘पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है.’’

‘‘बस, इसी चक्कर के कारण सूरज की रोशनी कभी चांद पर पूरी पड़ती है. तो कभी कम पड़ती है. इस का कारण है कि चांद पृथ्वी के चक्कर लगाता है और पृथ्वी सूर्य के. इस वजह कभीकभी चांद सूर्य के सामने पूरा आ जाता है तो कभी कुछ भाग आता है. कुछ अंधेरे में रहता है.’’

‘‘हां दादी, यह तो मुझे समझ में आ गया,’’ राहुल बोला, ‘‘मगर आप कहती हैं कि ये भाईबहन हैं तब तो ये साथ में रहते और खातेपीते होंगे.’’

इस पर दादी बोलीं, ‘‘जैसा कि तुम जानते हो कि पृथ्वी एक ग्रह है और चांद एक उपग्रह है. ग्रह सूर्य के चक्कर लगाते हैं. इस माने में ये निर्जीव हुए. तब

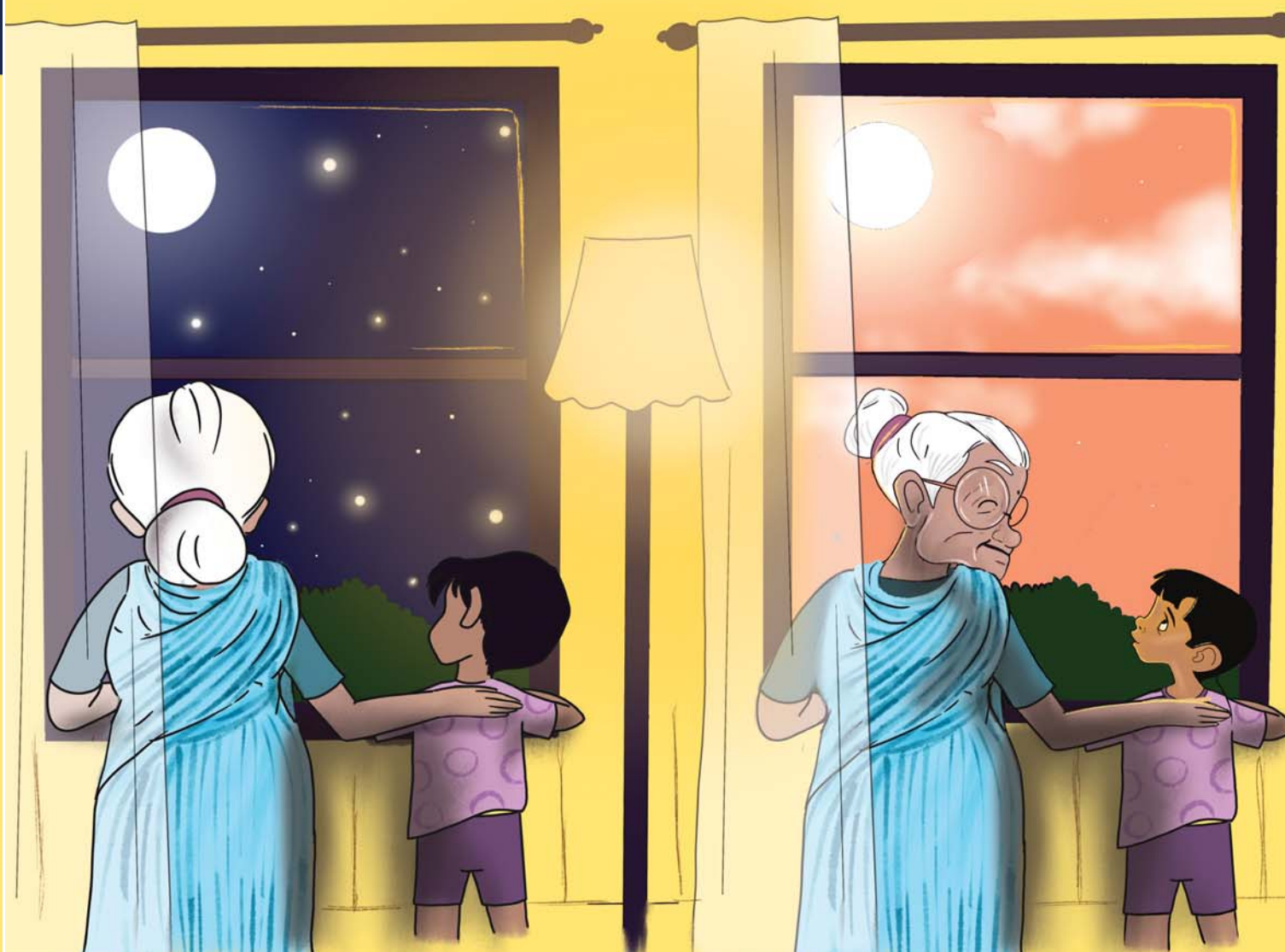

ये खातेपीते कैसे होंगे? इस का अंदाज तुम्हें है?''

''मगर आप ही तो कहती थीं कि चंद्रमा और सूरज में झगड़ा हो गया था. वे रूठ कर दूर चले गए. तब से वे एकदूसरे के सामने नहीं आते हैं. उन की मां ने उन का समझौता करवाया. तब कभीकभी वे एकदूसरे से मिलने चले आते मगर यह समझ में नहीं आया कि इतनी दूर से वे कैसे मिलते होंगे?''

''यह बात तो ठीक है,'' दादी बोलीं, ''पृथ्वी से सूरज की दूरी बहुत ज्यादा है,'' दादी ने कहा तो राहुल बोला, ''ज्यादा नहीं दादी, वह हम से 15 करोड़ किलोमीटर दूर है.''

''अरे, यह भी सही नहीं है उस की दूरी 1,496 लाख किलोमीटर दूर है.''

''नहीं दादी, आप गलत बता रही हैं,'' राहुल बोला.

इस पर दादी ने कहा, ''बेटा, तुम भी सही कह रहे हो और मैं भी सही कह रही हूं. तुम लगभग 15 करोड़ किलोमीटर बता रहे हो जबकि मैं इस संख्या में से 4 लाख किलोमीटर कम बता रही हूं, जो वास्तव में उस की सही दूरी है.''

''क्या,'' राहुल को दादी की बात पर विश्वास नहीं हुआ.

''हां, यह सही है. इसे 14 करोड़ 96 लाख किलोमीटर कह सकते हैं, जो तुम्हारी बताई दूरी 15 करोड़ किलोमीटर से 4 लाख किलोमीटर कम है.''

''ओह दादी, आप को भी सूरजचांद का ज्ञान है,'' राहुल दादी के गले लिपट कर बोला, ''मैं तो समझता था कि मेरी दादी को कुछ नहीं आता है.''

''आखिर मैं दादी किस की हूं.'' दादी ने झट से कहा.

''तुम्हारे साथ बैठ कर टीवी पर मैं भी समाचार देखती हूं. इसलिए इतनी ज्ञान तो मुझे भी है.'' दादी बोलीं तो राहुल ने पूछा, ''मगर दादी यह बताइए कि चांदसूरज वास्तव में भाईबहन थे.''

तब दादी बोलीं, ''अरे बेटा, वह तेरी दादी के कहानी के चांदसूरज हैं, वे भाईबहन भी हो सकते हैं और मांबेटा भी हो सकते हैं. कहानी तो कल्पना की उड़ान होती है. उस के सहारे हम कल्पना करना सीखते हैं. यही कल्पना आगे चल कर सच भी हो जाती है.''

यह सुन कर दादी और पोता दोनों हंस पड़े.

''वाकई दादी आप की कहानी का चांद बहुत खूबसूरत है,'' कह कर राहुल दादी के गले लग गया. दादी उसे थपकी दे कर दुलारने लगीं. ●

# बिंदु मिलाओ

चित्र पूरा करने के लिए अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं.

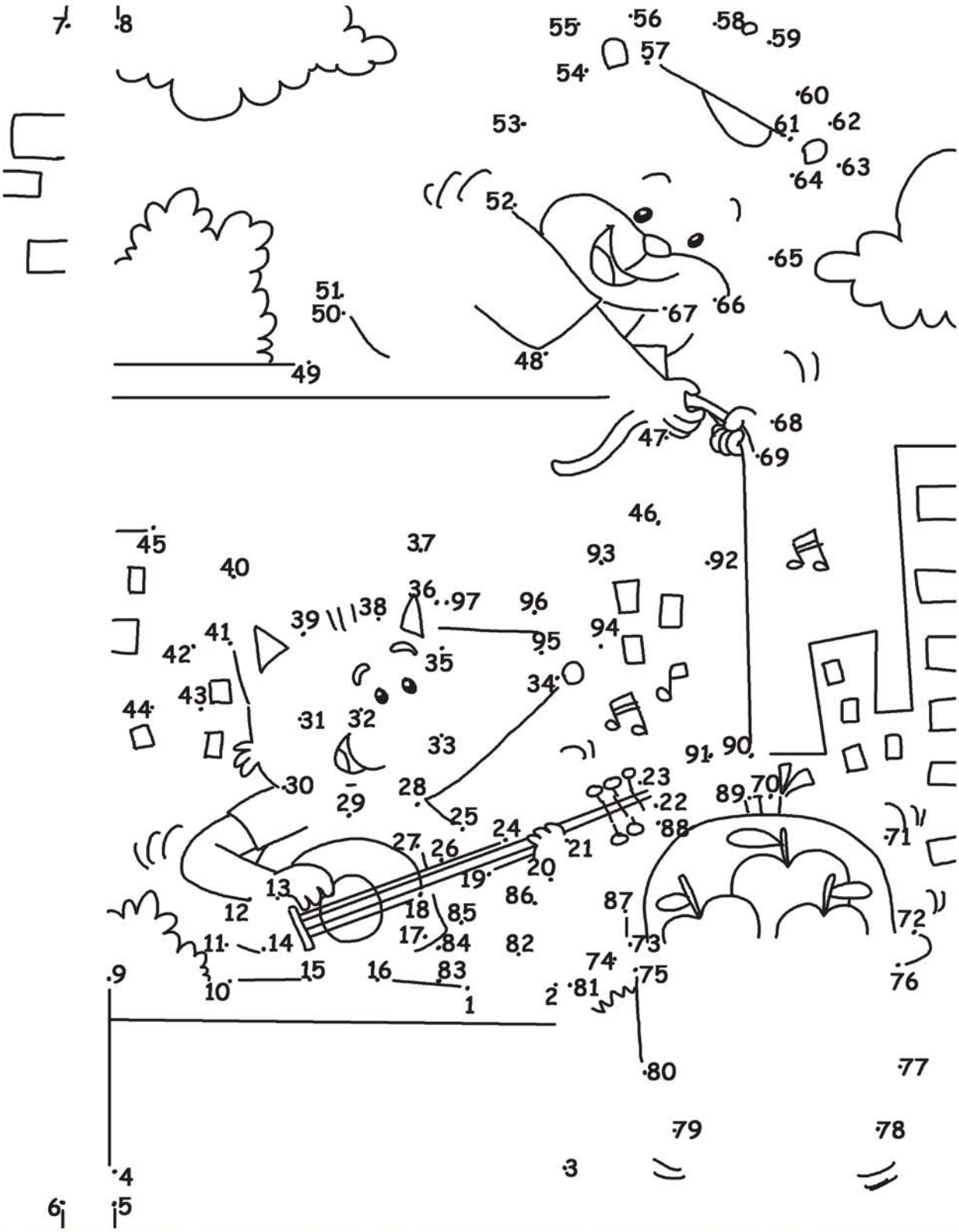

# मैं हूं कोरोना

ओमप्रकाश क्षत्रिय

''क्या आप मुझे जानते हो?'' जैसे ही किसी ने कहा तो देवांश चौंका, ''तुम कौन हो और ये गेंद पर चारों ओर पुरानी कीलें क्यों ठोक रखी हैं?''

इस पर वह आकृति बोली, ''मुझे नहीं जानते हो? मैं कोरोना हूं.''

''क्या?'' देवांश चौंका, ''अच्छाअच्छा, तुम वही बीमारी हो जो तेजी से दुनिया में फैल रही है?''

इस पर कोरोना ने कहा, ''हां.''

''तो फिर तुम फैलते कैसे हो?''

''मैं आंख और मुंह के जरिए शरीर में जाता हूं,'' कोरोना ने कहा, ''इस के बाद गले में अपना अड्डा जमा लेता हूं.''

''अच्छा.''

''हां,'' कोरोना ने कहा, ''इस के बाद तुम्हें खांसी आनी शुरू हो जाती है. तब मैं फेफड़े में जाता हूं.''

''हम तुम से कैसे बच सकते हैं?'' देवांश ने पूछा तो कोरोना बोला, ''हाथ को मुंह, नाक और आंख पर बारबार न लगाओ. अपने हाथ बारबार धोओ. इस से मैं फैल नहीं पाता हूं.''

''और?''

''बस, संक्रमित व्यक्ति को अलग रखो. अपना मुंह और नाक को ढको. आंख पर चश्मा चढ़ा लो,'' कोरोना बोला.

''इस के अलावा कोई उपाय?'' देवांश ने कहा तो कोरोना बोला, ''फिलहाल बचाव ही एकमात्र उपाय है.''

''अच्छा तो यह बताओ, तुम फैलते कैसे हो?''

''मेरी गेंद जैसी आकृति में ये कील जैसी

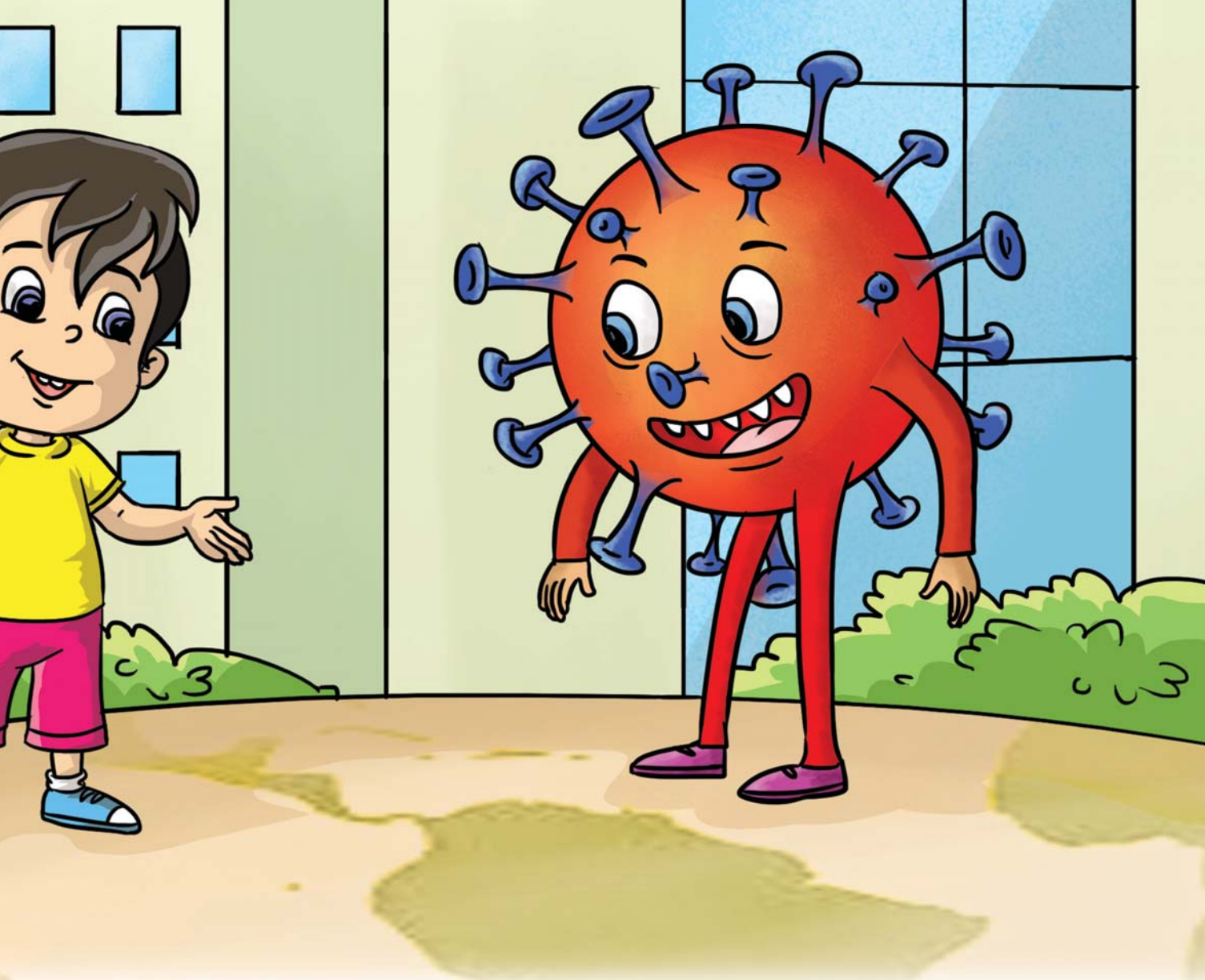

आकृति है. इस में प्रोटीन होता है. यह गले की कोशिका में चिपक जाता है, फिर वहां अपनी संख्या बढ़ाना शुरू कर देता है. तब फेफड़े में जा कर कोशिका को मारना शुरू कर देता है. इस से फेफड़े में मृत कोशिका और तरल द्रव्य भरने लगता है. इस से तुम्हें सांस लेने में तकलीफ होती है. खून में औक्सीजन की कमी हो जाती है. फेफड़े सांस लेना बंद कर देते हैं,'' करोना ने कहा.

''तब तो तुम बहुत बुरे हो?'' देवांश चिल्लाया तो करोना ने कहा, ''यदि तुम साफसफाई रखो, अपने हाथ मुंह, नाक और आंख पर न ले जाओ तो मुझ से संक्रमित नहीं हो सकते हो.''

मगर तब तक देवांश की मां बिस्तर तक आ चुकी थीं, ''अरे देवांश, क्या हुआ? नींद में सपना देख रहे थे.''

''हां मम्मी,'' कहते हुए देवांश ने पूरा किस्सा सुना दिया. तब मम्मी बोली, ''तुम ने बहुत अच्छा सपना देखा है. इस का पालन करोगे तो हम कोरोना से बच सकते हैं,'' कहते हुए मम्मी काम करने लगीं.

देवांश उठ कर बैठ गया. ●

# चीकू

चित्रकथा : दास

चीकू और मीकू बाहर टहलने निकल गए.

चीकू, देखो मुझे क्या मिला है.

अरे, यह तो रुपयों से भरा एक पर्स है.

किसी का गिरा होगा.

चलो, इस पर्स के मालिक को ढूंढ़ते हैं.

वहां देखो, वह बूढ़ा आदमी कुछ ढूंढ़ रहा है. यह पर्स उसी का हो सकता है.

दोनों उस बूढ़े आदमी के पास गए.

दादाजी, क्या आप अपना पर्स ढूंढ़ रहे हैं.

नहीं, बेटा, मैं अपना चश्मा ढूंढ़ रहा हूं.

दादाजी, आप का चश्मा तो आप के सिर के ऊपर है.

अरे, हां, यह यहां है और मैं काफी देर से इसे यहांवहां ढूंढ़ रहा हूं.

चलो मीकू, पर्स के मालिक को ढूंढ़ते हैं.
थोड़ी देर बाद उन्होंने एक भालू को कुछ ढूंढ़ते हुए देखा.
भाई, आप क्या ढूंढ़ रहे हो? ऐसा लगता है आप की कोई कीमती चीज खो गई है?
हां, वह बहुत ही कीमती है. मेरा दांत टूट कर गिर गया है. मैं उसी को ढूंढ़ रहा हूं.
आप को दांत की क्या जरूरत है? आप तो बिना दांत के भी शहद पी सकते हैं.
यह मजाक की बात नहीं है. भाग जाओ यहां से.
चीकू और मीकू वहां से भाग गए.
मीकू, वहां देखो, डिंकू रो रहा है.
डिंकू, तुम रो क्यों रहे हो?
धोबी ने मुझे आज बहुत मारा.
यह तो बहुत बुरी बात है. चलो, उसे हम सबक सिखाते हैं. उस के बाद हम इन रुपयों से पार्टी करेंगे.
पार्टी? क्या तुम्हें कोई पर्स मिला है?
हां.
यह पर्स मेरे मालिक धोबी का है. मैं ने यह पर्स खो दिया था और इसी कारण उस ने मुझे खूब पीटा.
ओह.

## बताओ तो जानें

1. मेरे कई प्रकार हैं
2 हाथ और पीठ है
4 पैर भी हैं
पर मैं चल नहीं पाती.

2. हर कोई मेरे ऊपर
सिर टिका कर सोता है
रंगबिरंगे कवर लगा कर
खूबसूरत मुझे बनाता है.

3. मेरी गरदन है पर सिर नहीं
सिर के बदले है ढक्कन
स्वच्छ पानी मुझ में भर लो
प्यास लगे तो खोल कर पीलो.

4. मेन गेट पर होता हूं.
आने वालों का रखता खयाल
उंगली से मुझे दबाओ
मालिक खोलेगा तभी द्वार.



## देखें तुम कितना जानते हो

1. कागज की खोज किस देश में हुई थी?
(क) जापान
(ख) इंडोनेशिया
(ग) चीन
(घ) भारत

2. इन में से व्हेल का कौन सा प्रकार है जो दुनिया का सब से बड़ा जानवर है?
(क) ब्लू व्हेल
(ख) किलर व्हेल
(ग) हंपबैक व्हेल
(घ) बेलुगा व्हेल

3. अंतरिक्ष में जाने वाला प्रथम भारतीय कौन था?
(क) कल्पना चावला
(ख) एन सी भट्ट
(ग) पी राधाकृष्णन
(घ) राकेश शर्मा

4. नीबू में कौन सा एसिड पाया जाता है?
(क) निट्रिक एसिड
(ख) सिट्रिक एसिड
(ग) बोरिक एसिड
(घ) औक्सालिक एसिड

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–कुरसी, 2–तकिया, 3–बोतल, 4–डोरबैल.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–क, 3–घ, 4–ख.

# विश्व विरासत दिवस

18 अप्रैल को विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है. भारत के 38 स्थान विश्व विरासत की सूची में दर्ज हैं. इस का मतलब यह है कि इन स्थानों को सुरक्षित और संरक्षित किया गया है और किसी भी तरह से इन्हें नुकसान नहीं पहुंचाना है. नीचे के दिए चित्र को देखें और इन स्थानों की पहचान करें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

# चोरी का राज

कहानी ● डा. के. रानी

बीरू भालू सुबहसवेरे अकेले वन में टहलने के लिए निकला था. वह अपनी ही धुन में चला जा रहा था. लगता था उस के दिमाग में कोई उलझन है, जिसे वह सुलझाने की कोशिश कर रहा था. सड़क पर आगे बढ़ते ही उस के सामने से तेजी से रैंटू चूहा भागा. बीरू का पैर उस के ऊपर पड़ने ही वाला था कि रैंटू जोर से चिल्लाया. उस की आवाज सुन कर बीरू ने अपना पैर पीछे खींच लिया.

''कहां खोए हो बीरू भाई?''

''कहीं नहीं, बस यों ही कुछ सोच रहा था,'' बीरू बोला.

''किस बारे में?''

''तुम जान कर क्या करोगे?''

''शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं,'' रैंटू बोला.

''तुम तो जानते हो, आजकल वन में कितनी चोरियां हो रही हैं पर चोर का कोई अतापता ही नहीं है.''

इस बात को ले कर वन के सारे प्राणी चिंतित थे, वे वहां खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे थे.

''हम भी मजबूर हैं. हम चोर को पकड़ ही नहीं पा रहे हैं. वह बहुत चालाक है और अपने काम को बड़ी कुशलता से अंजाम दे रहा है. कहीं कोई सुबूत नहीं छोड़ता. हमारे राजा इस बात को ले कर बहुत चिंतित हैं. यही कारण है कि हम सभी इस बारे में सोच रहे हैं. अब तुम इस में मेरी क्या मदद कर सकते हो?''

''मैं कुछ सोचता हूं. हो सकता है मुझे कोई उपाय सूझ जाए. प्रयास करने में कोई हर्ज तो नहीं है.''

''तुम ठीक कहते हो, लेकिन वन के गुप्तचर भी अभी तक इस का कोई हल नहीं निकाल सके,'' इतना कह कर वे चुप हो गए. बीरू की बातों ने रैंटू को सोचने के लिए मजबूर कर दिया.

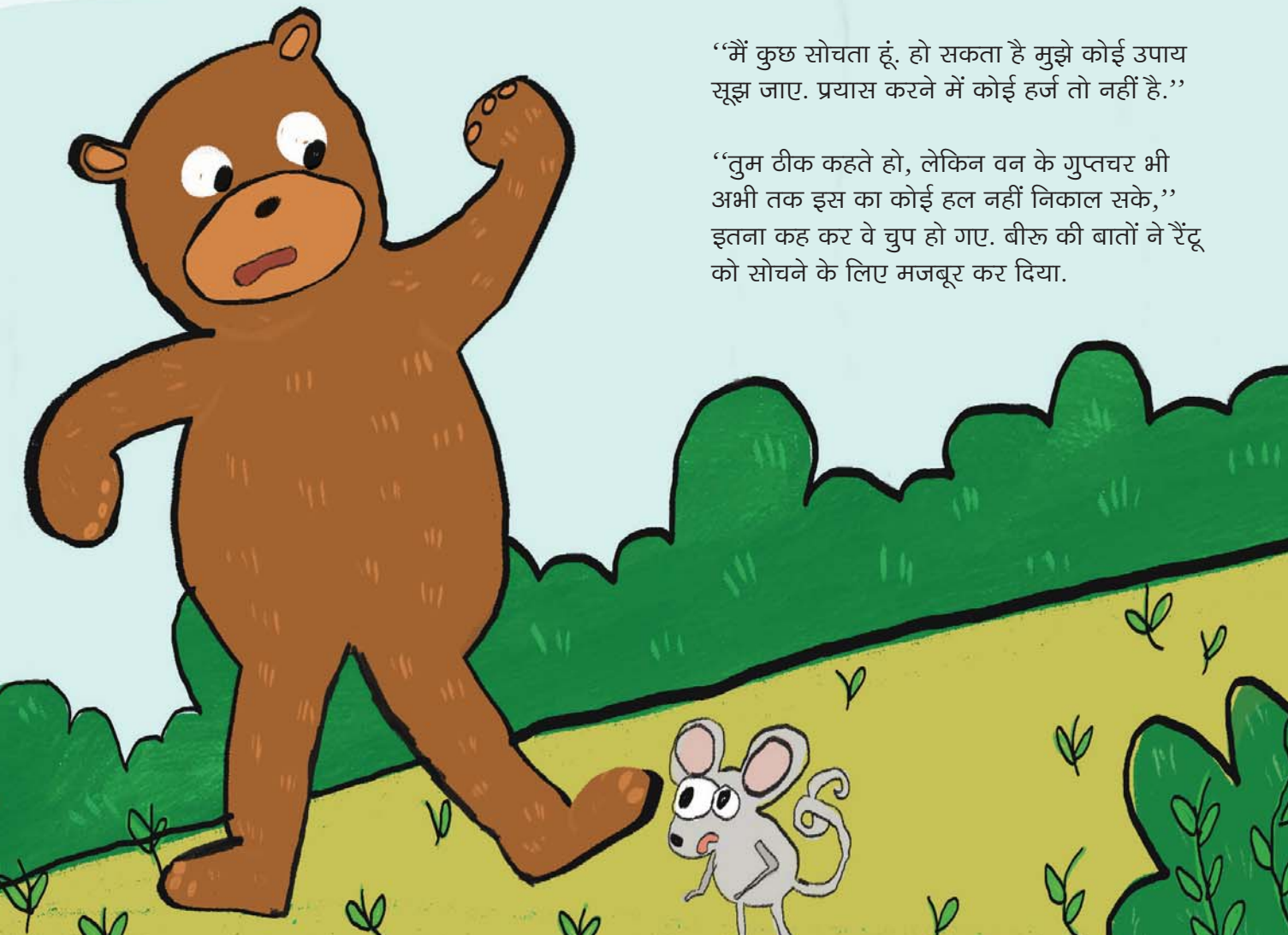

रैंटू को उदास देख कर बीरू बोला, ‘‘तुम अपना मन छोटा मत करो. मुझे अच्छा लगा कि तुम ने मेरी परेशानी को समझा.’’

‘‘कभी मैं भी इस वन के लिए गुप्तचर का काम करता था. एक बार मेरी टांग टूट जाने से मेरे अंदर फुर्ती नहीं रही. तब से मैं ने यह काम छोड़ दिया,’’ रैंटू बोला.

‘‘तुम चाहो तो यह काम दोबारा कर सकते हो. वन के प्राणी ज्यादातर दिन में भोजन की तलाश करते हैं व रात को आराम करते हैं. तुम दिनरात दोनों में ही भोजन की तलाश में निकल सकते हो. हो सकता है रात को तुम्हें कुछ ऐसी बात का पता चल जाए जो हमारे काम की हो.’’

‘‘हां, तुम ठीक कहते हो. मैं आज रात को वन में घूम कर इस बात का पता करने की कोशिश करता हूं.’’

थोड़ी देर बातें कर के रैंटू अपने बिल की ओर बढ़ गया और बीरू अपने रास्ते चला गया. रैंटू के दिमाग में अभी तक बीरू की कही बातें घूम रही थीं. उसे समझ नहीं आ रहा था वह बीरू की मदद कैसे करे. दिनभर वह इसी उधेड़बुन में लगा रहा.

शाम होते ही रैंटू ने कुछ सोचा और वह चुपचाप बिल से बाहर निकल आया. रैंटू की पत्नी ने देखा तो बोली, ‘‘इस समय कहां जा रहे हो? बाहर खतरा है.’’

‘‘खतरा तो सुबह भी रहता है, लेकिन खतरों से डर कर हम भूखे तो नहीं मर सकते. मैं बाहर घूम कर आता हूं,’’ इतना कह कर रैंटू रात को बिल से बाहर निकल आया. कुछ दूर जा कर उस की नजर बंकू उल्लू पर पड़ी, जो कुछ ही दूरी पर था. वह पेड़ की डाल पर बैठा अपनी गरदन चारों तरफ घुमा रहा था. वह जल्दी से पेड़ की एक डाल से दूसरी पर उड़ रहा था. बंकू की नजर उस पर नहीं पड़ी थी.

कुछ सोच कर रैंटू पेड़ के पीछे से बाहर निकल कर थोड़ी खुली जगह पर आ गया और वहां से बंकू उल्लू को देखने लगा. बंकू ने रैंटू को अंधेरे में भी देख लिया पर उस ने उस में कोई उत्सुकता नहीं दिखाई और अपनी गरदन चारों ओर घुमाता रहा. रैंटू बड़ी देर तक बंकू की हरकतों पर नजर रखे रहा. वह थोड़ी देर तक खुले मैदान में खड़ा रहा पर बंकू ने उसे देख कर भी अनदेखा कर दिया. उस ने महसूस किया कि बंकू के आसपास चमकू चमगादड़ भी मंडरा रहा था.

कुछ देर वन में घूमने के बाद रैंटू अपने बिल में लौट आया और सुबह होने का इंतजार करने लगा.

अगली सुबह बीरू उसी रास्ते जा रहा था. रास्ते में रैंटू चूहा उस का इंतजार कर रहा था.

‘‘आज बड़ी जल्दी आ गए बीरू,’’ रैंटू बोला.

‘‘हां, आजकल मुझे चिंता की वजह से नींद नहीं आती. कोई नई खबर है क्या?’’

‘‘यकीन से तो मैं नहीं कह सकता, पर मैं तुम्हें ऐसे प्राणी का नाम बता सकता हूं, जो शायद चोरों की मदद कर रहा है.’’

‘‘कौन है वह?’’

‘‘बंकू उल्लू,’’ इतना कह कर रैंटू ने कल रात की घटना उसे ज्यों की त्यों सुना दी. इसे सुन कर बीरू का माथा ठनका.

बीरू की आंखें चौंधिया गईं, ‘‘तुम ठीक कह रहे हो, मुझे आज रात बंकू और चमकू पर नजर रखनी होगी,’’ इतना कह कर वे दोनों अपनेअपने रास्ते चले गए. रात को अपने साथियों के साथ बंकू पर नजर गड़ाए रहा. उस की संदिग्ध गतिविधियों को देख कर बीरू ने उसे उस के साथियों चंकी व संकी लोमड़ के साथ पकड़ लिया.

बीरू ने सख्ती से पूछताछ करनी शुरू की, ‘‘तुम इस समय बंकू और चमकू चमगादड़ के साथ क्या कर रहे हो?’’

‘‘हम चारों दोस्त हैं इसलिए साथ बैठ कर बातें कर रहे हैं.’’

‘‘चमगादड़ और उल्लू की दोस्ती तो समझ में आती है, पर लोमड़ के साथ दोस्ती कैसे हो सकती है?’’

सख्ती से पूछने पर दोनों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया और सभी चोरियों के बारे में बताया, जो उन्होंने कुछ दिनों पहले इस वन में की थीं. बीरू ने उन से चोरी का सारा सामान भी बरामद कर दिया. बंकू उल्लू और चमकू चमगादड़ को अभी तक समझ नहीं आ रहा था कि वे इतनी आसानी से पकड़ में कैसे आ गए? ●

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

# चित्र पूरा करें

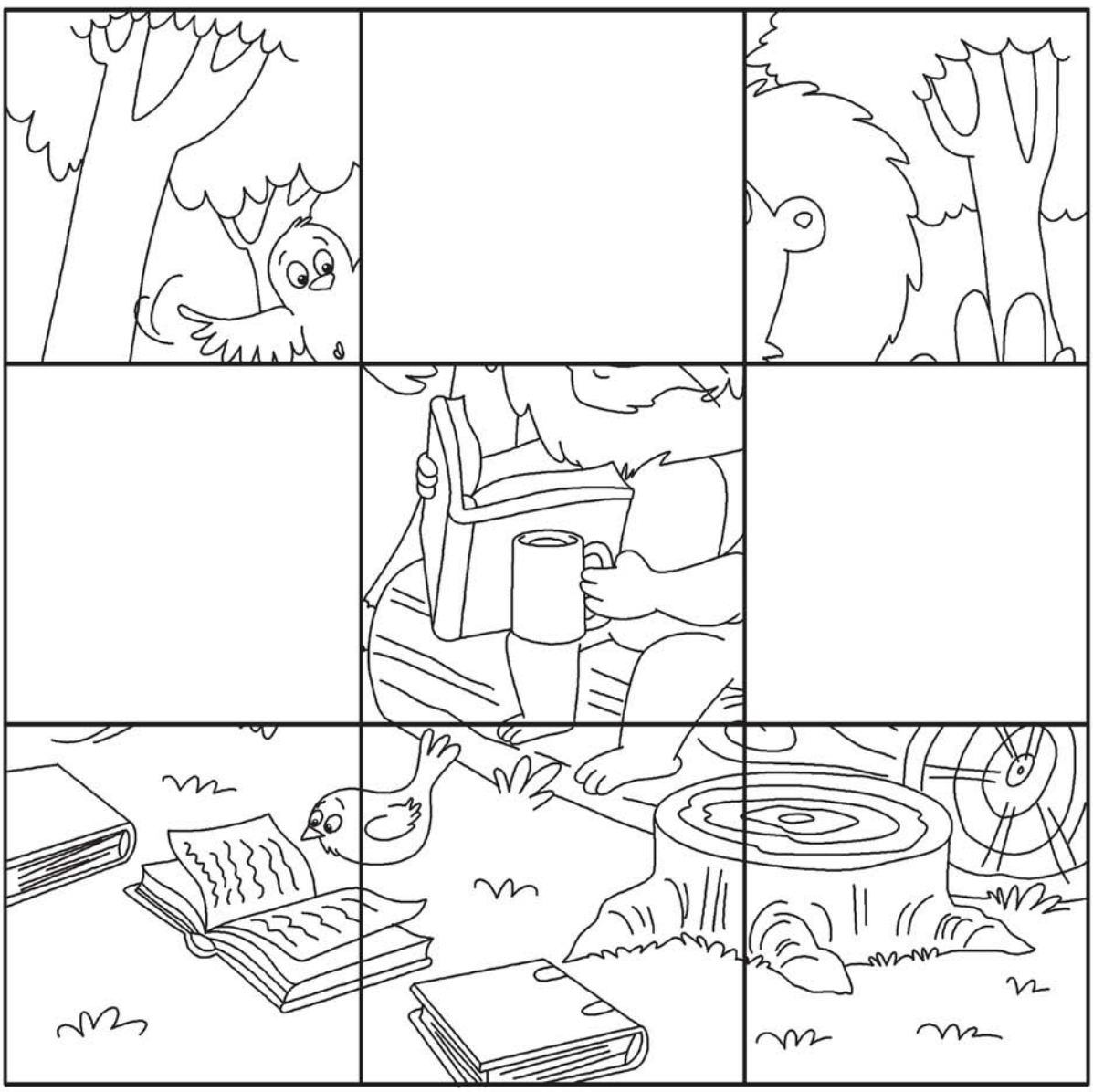

# भूत स्मार्ट

**सूती कपड़े का इस्तेमाल कर एक घोस्ट यानी भूत बनाएं और अपने दोस्तों को डराएं.**

## आप को चाहिए :

बारीक सूती कपड़ा, एक बौल, एक बोतल, फैविकोल, एक पानी की कटोरी, ब्लैक मार्कर.

## ऐसे बनाएं :

1. पानी में 2 चम्मच फैविकोल मिलाएं और इस में कपड़े को डूबो दें.

2. बोतल के मुंह पर एक बौल रख दें.

3. कटोरी से कपड़े को निकालें और इसे ठीक से निचोड़ लें. कपड़े को बौल के ऊपर इस तरह से फैला दें कि देखने में इस का आकार भूत की तरह लहराता हुआ दिखे जैसा चित्र में है. इसे सूखने दें.

4. जब कपड़ा सूख जाए तो बौल और बोतल को कपड़े के नीचे से हटा लें. अब कपड़ा खुद ही सख्त हो कर भूत की तरह खड़ा हो जाएगा.

**अब आप का भूत दोस्तों को डराने के लिए बन कर तैयार हो चुका है.**

**अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.**

# पत्रिकाएं पढ़ें ➡➡➡ आगे बढ़ें

पत्रिकाएं पढ़ें. छपे **सुंदर चित्र**, जानकारी बढ़ाने वाली **कहानियां** पढ़ने से ही याद रखने की आदत बनेगी. टीवी और मोबाइल की घूमती तसवीरें मन में टिकती नहीं हैं.

टीवी कार्टूनों में दोस्ती, प्यार, सचाई कहां है.

**पत्रिकाएं जब मरजी हो, तब पढ़ें.** छपे चित्रों को काट कर सजा लें, खुद ही इन में सुंदर रंग भर लें. चुटकले, पहेलियां सब के साथ शेयर करें. अपटूडेट रहें. टीवी सिर्फ देख सकते हैं.

बस में हों या रेल में, हर समय पत्रिकाएं ही आप के साथ हैं. **पत्रिकाएं सच्ची दोस्त.**

***पत्रिकाएं पढ़ें, आगे बढ़ें.***

# उड़ान हो जाए

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

क्रोक कौवे ने नन्ही गौरैया को उड़ते हुए देखा. उसे लगा कि उस से अच्छा तो वह उड़ लेता है. उसे कई तरह की उड़ानें आती हैं. वह उड़तेउड़ते पलट सकता है. सीधा ऊपर से नीचे आ जाता है. फिर एकाएक ऊपर उड़ जाता है.

यह नन्ही चिड़िया इस तरह उड़ना भी नहीं जानती है. यह सोच कर उस ने नन्ही से कहा, ''अरे नन्ही, ये क्या कर रही हो?''

डिंपी ने प्यार से जवाब दिया, ''मेरा नाम नन्ही नहीं, डिंपी है.''

''तुम्हारा नाम जो भी हो, नाम में क्या रखा है. असली नाम तो उस के काम से होता है,'' क्रोक ने कहा, ''मगर अभीअभी तुम क्या कर रही थी?'' उस ने दोबारा पूछा.

''अपने बच्चों के लिए दानापानी ला रही हूं,'' डिंपी ने जवाब दिया.

इस पर क्रोक हंसा, ''इस तरह उड़ कर,'' उस ने उस की नकल करते हुए पूछा.

डिंपी सबकुछ समझ गई. क्रोक को खुद पर घमंड हो गया है.

इस कारण डिंपी बोली, ''मैं तो इसी तरह उड़ती हूं.''

''इसे उड़ना कहते हैं. मुझे देखो. मैं कई तरह की उड़ान जानता हूं,'' क्रोक ने घमंड में आ कर डिंपी से कहा.

''मुझे तो एक उड़ान आती है,'' डिंपी बोली, ''सीधी और सपाट उड़ान.''

इस पर क्रोक दोबारा हंसा, ''अच्छा, इस उड़ान को देख लेते हैं, कौन कितनी तेजी से उड़ता है. तुम्हारे पंख केवल दिखावटी तो नहीं हैं.''

डिंपी अपनी क्षमता जानती थी. क्रोक बड़ा पक्षी है. वह तेजी से उड़ता है. उस की बराबरी डिंपी नहीं कर

सकती है. इसलिए उस ने कहा, ‘‘मुझे तुम्हारे साथ उड़ने का शौक नहीं है.’’

यह सुन कर क्रोक का सिर घमंड से ऊंचा हो गया. वह समझ गया कि डिंपी उस की बराबरी नहीं कर सकती है. इसलिए उस ने अकड़ कर कहा, ‘‘यह क्यों नहीं कहती कि तुम डर गई हो.’’

डिंपी कुछ नहीं बोली. उस के बच्चे क्रोक की बातें सुन रहे थे. उन्हें अच्छा नहीं लगा. इस कारण डिंपी के बच्चे ने कहा, ‘‘मम्मी, आप उड़ने से डर गई हैं?’’

‘‘नहीं मेरे प्यारे बच्चो,’’ डिंपी ने जवाब दिया. उसे बहुत बुरा लगा. उस के बच्चे भी उसे चिढ़ा रहे थे. इसलिए उस ने क्रोक से कहा, ‘‘तुम्हें उड़ने का शौक है इसलिए देखते हैं कौन जीतता है. मगर मेरी एक शर्त है. जहां से मैं कहूंगी उस रास्ते से उड़ना पड़ेगा. तभी हम इस रेस में हिस्सा लेंगे.’’

‘‘हां, क्यों नहीं,’’ क्रोक ने कहा. वह जानता था कि डिंपी उस का मुकाबला नहीं कर सकती है. उस के पंख छोटे हैं. वह धीरेधीरे उड़ती है जबकि उस के पंख बड़े हैं और वह तेजी से उड़ सकता है.

क्रोक घमंड में बोला, ‘‘चलो, मुझे शर्त मंजूर है.’’

इस पर डिंपी ने कहा, ‘‘हम इस पेड़ से उड़ेंगे और सीधे उस दूसरे नंबर के पेड़ के बीच में से जाएंगे. वहां से उड़ कर तीसरे पेड़ पर पहुंचेंगे, जो तीसरे नंबर के पेड़ पर सब से पहले पहुंचेगा, वह जीता हुआ माना जाएगा.’’

‘‘हां, मुझे मंजूर है,’’ क्रोक ने कहा तो डिंपी बोली, ‘‘तो हो जाए उड़ान.’’

‘‘हां.’’

यह सुन कर डिंपी के बच्चे खुश हो गए. ‘‘मम्मी, मैं 1,2,3 बोलूंगा,’’ कह कर वह तैयार हो गया.

क्रोक ने घमंड में कहा, ‘‘ठीक है. पहले तुम उड़ना. बाद में तुम्हारे पीछे मैं उड़ कर आऊंगा,’’ कह कर क्रोक उड़ने के लिए तैयार हो गया.

डिंपी के बच्चे ने 1, 2, 3 गिनती गिनी और डिंपी उड़ने लगी. आगेआगे डिंपी उड़ रही थी. पीछे से क्रोक ने उड़ान भरी. वह तेजी से उड़ रहा था. इस कारण डिंपी से पहले वह पहले पेड़ के पास पहुंच गया.

‘‘क्या हुआ डिंपी पीछे रह गई क्या?’’ क्रोक ने तेजी से उड़ते हुए डिंपी से कहा, ‘‘मेरी तरह उड़ कर

बताओ तो जानूं,'' कहते हुए क्रोक ने हवा में एक गोता लगाया. वह तेजी से ऊपरनीचे गया और उस से बोला, ''यह मेरी हवाछलांग वाली उड़ान है.''

''बहुत अच्छी है,'' कहते हुए डिंपी तेजी से उड़ी, ''अब इस पेड़ के बीच से निकलो. जैसा हम ने पहले तय किया था.''

यह सुन कर क्रोक तेजी से पेड़ के बीच में से निकल कर उड़ने लगा. डिंपी छोटी थी इसलिए वह घने पेड़ के पत्तों के बीच से आसानी से निकल गई. क्रोक बड़ा था. वह पेड़ के बीच में घुसा.

पेड़ घना था. उस की डालियां पासपास थीं. पत्तियां बहुत थीं. उस में से बड़े पक्षी के निकलने की जगह नहीं थी. क्रोक उड़ते हुए उस के अंदर घुसा. वह एक डाली से टकराया. यह देख कर डिंपी ने कहा. ''तुम चाहो तो फुदकफुदक कर इसे पार कर सकते हो,'' कहते हुए डिंपी तेजी से उड़ी.

''ठीक है,'' क्रोक ने पत्तियों से इधरउधर टकराते हुए कहा.

''तब तक मैं दूसरे पेड़ तक चलती हूं,'' कहते हुए डिंपी तेजी से उड़ने लगी.

यह देख कर क्रोक घबराया. वह तेजी से एक डाली पर उतरा. वहां से फुदक कर वह एक के बाद एक डाली पर गया. इस तरह वह घने पेड़ों को कूदकूद कर पार करने लगा. तब तक डिंपी दूसरे पेड़ को पार कर के आगे उड़ कर जा चुकी थी.

यह देख कर क्रोक को गुस्सा आ गया. ''डिंपी ने मेरे साथ धोखा किया है. खैर, कोई बात नहीं. मैं उस से तेज उड़ सकता हूं. अभी उसे मजा चखाता हूं,'' कहते हुए क्रोक तेजी से उड़ कर दूसरे पेड़ पर गया. वह पेड़ कम घना था. क्रोक ने तेजी से उसे पार करने के लिए सीधी उड़ान भरी.

मगर यह क्या, अचानक न जाने क्या हुआ. वह हवा में लटक कर रह गया. वह उड़ नहीं पा रहा था. यह देख कर वह हैरान रह गया था. उसे समझ नहीं आया कि क्या हुआ. उस ने झट से अपनी आंखें अपने पंखों की ओर घुमाईं. पंख एक जाल में उलझे हुए थे.

उस ने इधरउधर देखा. उस पेड़ पर शिकारी ने कबूतरों को पकड़ने के लिए जाल फैला रखा था. उस जाल में क्रोक फंस गया था.

यह देख कर क्रोक रोने लगा, ''अरे, मैं तो जाल में फंस गया.''

तब तक डिंपी तीसरे पेड़ पर पहुंच चुकी थी. उस ने बहुत देर तक क्रोक की प्रतीक्षा की. मगर वह नहीं आया. तब वह वापस आई.

''अरे, तुम अभी तक यहीं हो?'' उस ने क्रोक को एक डाली पर लटके हुए देखा तो पूछा, ''तुम यहां क्या कर रहे हो? और यह कौन सी उड़ान है?''

यह सुन कर क्रोक की आंखों में आंसू आ गए. वह समझ गया कि वह जाल में फंस चुका है. डिंपी छोटी थी. इसलिए आसानी से जाल के बीच से निकल गई

थी. वह घमंड में जाल को देख नहीं पाया. वह उसी में फंस कर रह गया है.

‘‘डिंपी, मैं जाल में फंस गया हूं,’’ कहते हुए क्रोक की आंखों में आंसू आ गए.

यह देख कर डिंपी ने कहा, ‘‘अरे भाई, इस में घबराने की क्या बात है. मैं हूं न, अभी तुम्हारे पंखों के जाल को काट देती हूं,’’ कहते हुए वह क्रोक के पास गई. उस ने तेजी से क्रोक के पंखों में फंसे जाल को काटना शुरू किया. कुछ ही देर में उस ने जाल काट दिया.

क्रोक के पंख जाल  से छूट चुके थे. उस ने अपने पैरों में फंसे जाल को अपनी चोंच से काट कर हटाया. फिर डिंपी से कहा, ‘‘डिंपी, मुझे माफ करना. मुझे अपनी उड़ान पर घमंड हो गया था. मैं समझता था कि मैं ही तेजी से उड़ सकता हूं. मगर मुझे नहीं मालूम था कि तुम छोटी गौरैया हो इसलिए छोटी सी जगह में भी तेजी से उड़ सकती हो.’’

इस पर डिंपी बोली, ‘‘क्रोक भाई, कुदरत ने हर जीव को अलग विशेषता दी है. वह उस का उपयोग अपने हित के लिए करता है. इसलिए किसी जीव को छोटाबड़ा नहीं समझना चाहिए. प्रकृति में हरेक का अपना महत्त्व है. वे किसी न किसी कार्य के निमित बनाए गए हैं.’’

‘‘तुम ठीक कहती हो,’’ कहते हुए क्रोक और डिंपी अपने ठिकाने पर लौट आए. वहां डिंपी के बच्चे अपने घोंसले में बैठे थे. उन्होंने डिंपी के आते ही पूछा, ‘‘मां, उड़ान में कौन जीता?’’

डिंपी बोली, ‘‘तुम्हारे क्रोक मामा जीते हैं.’’

क्रोक ने कहा, ‘‘ नहीं बच्चो, उड़ान की व्यावहारिकता में तुम्हारी मम्मी जीती हैं. मैं तो घमंड में हार गया हूं,’’ यह कह कर वह खिललिखा कर हंस दिया.

बच्चे छोटे थे, वे हंस कर कहने लगे, ‘‘मम्मी जीत गईं. मम्मी जीत गईं.’’

यह सुन कर डिंपी भी मुसकरा दी. ●

# दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

दादाजी राहुल को ढूंढ़ने कमरे में आए. राहुल अजीबोगरीब ढंग से चल रहा था जबकि रिया हंस रही थी.

मैं आप से सहमत हूं, दादाजी, किसी भी चीज को सीखने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है.
बिलकुल सही. नृत्य एक कला है जैसे मूर्ति या चित्रकला. लेकिन इन्हें जो प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए थी, हमारे समाज द्वारा नहीं दी गई है. वास्तव में नर्तकों को तुच्छ दृष्टि से देखा जाता था और अभी भी ऐसा ही है.
लोगों के सोचने के नजरिए को बदलने के लिए कि यह कला कितनी खूबसूरत है, यह दिखाने के लिए 29 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है. यह फ्रेंच बैलेट डांसर जीन जौर्जेस नोवर्रे का जन्मदिन है.
दादाजी, यह दिन खास भी है क्योंकि राहुल जैसे लोगों को यह समझने में मदद मिलेगी कि नृत्य एक कला है और इस में दक्षता किसी को तभी मिलेगी जब वह प्रयास करेगा.
राहुल हैरान हो गया जबकि रिया और दादाजी हंसने लगे.

# नन्ही कलम से

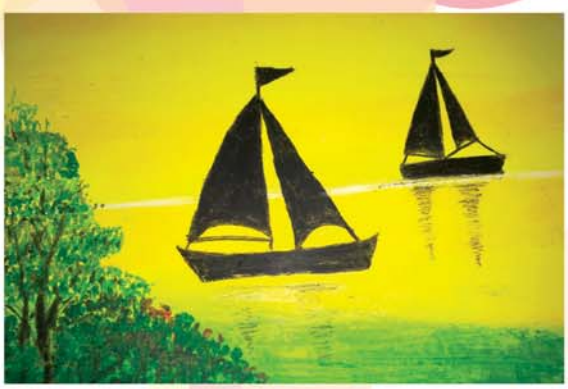

**सार्थक कोठियाल, 13 वर्ष,** नई दिल्ली

## सफलता की कुंजी

पिंग नाम का एक लड़का था. वह बहुत आलसी था. उस का जब रिजल्ट आया तो उसे सिर्फ 3 नंबर मिले थे. रिजल्ट देख कर वह डर गया और घर जा कर उस की मम्मीपापा को रिजल्ट दिखाने की हिम्मत नहीं हो रही थी. उस ने सोचा कि अगर मैं 3 के बाद जीरो लिख दूं तो नंबर 30 हो जाएंगे और किसी को पता भी नहीं चलेगा कि मुझे कम नंबर मिले हैं. वह घर गया तो मम्मी ने पूछा, ''परीक्षा में तुम्हें कितने अंक मिले?'' पिंग ने मम्मी को रिजल्ट दिखा दिया. रिजल्ट देख कर मम्मीपापा दुखी हुए क्योंकि टीचर ने पहले ही उन्हें पिंग के रिजल्ट के बारे में फोन पर बता दिया था. वे जान गए कि पिंग झूठ बोल रहा था. मम्मी और पापा ने पिंग को सबक सिखाने की सोची. मम्मी ने पिज्जा के लिए फोन से और्डर भेज कर पिंग से कहा, ''तुम ने अच्छा किया है. अच्छे नंबर पाने के लिए मैं तुम्हारे प्रिंसिपल से कहूंगी कि वह तुम्हें एक मैडल दें.'' पिंग खुश नहीं था. वह जानता था कि उस ने क्या गलती की थी. उस ने सोचा, सचाई बता देनी चाहिए नहीं तो स्कूल से वह निकाला भी जा सकता है. उस ने रोते हुए मम्मीपापा को सबकुछ सचसच बता दिया. उस ने कहा कि आप लोगों की डांट से बचने के लिए मैं ने 3 के आगे 0 लगा कर उसे 30 बना दिया था. मम्मी ने उसे गले लगाते हुए कहा कि तुम्हारे रिजल्ट के बारे में हमें पहले से ही पता था. हम तुम्हें सबक सिखाना चाहते थे. चीटिंग करने से सफलता नहीं मिलती. सफलता की चाबी कठिन मेहनत करना है. पिंग ने वादा किया कि अब कभी वह ऐसी भूल नहीं करेगा.

**रियान दत्ता, 9 वर्ष,** झारखंड

## प्यार की मोमबत्ती

प्यार जलती हुई मोमबत्ती के समान है और विश्वास इस के जलने को आसान बनाता है. इसे चारों तरफ से मोम घेरे हुए है, जो इसे चमकदार और जलने लायक बनाता है. खुशी के पलों को आप ऐंजौय करते हैं और चीखनेचिल्लाने से बच जाते हैं. वे हमारी जिंदगी को प्यार के भावों से भर देते हैं, हमारे जोक्स और हताशाभरी बातें सुना करते हैं. जितना यह पुराना होता है, उतना ही जलने में तेज होता है. दया, विश्वास और संवेदना का इस से क्या संबंध है. जब आप इसे जलाते हैं, इस की लौ को जलते और नाचते हुए देखते हैं तो आप के दिल को सुखद एहसास होता है. वर्तमान भी सुखद होता है और बीता कल सुखद ही था. समुद्री जहाज दूरदूर तक यात्रा करता है. उसी की तरह हम भी जीवन में नम्रता सीखते हैं. प्रेमपूर्ण व्यवहार करने लगते हैं. जलती हुई मोमबत्ती की तरह ही प्रेम भी होता है जिसे विश्वास के सहारे फैलाया जा सकता है.

**शाओलिन प्रजापति, 13 वर्ष,** जबलपुर

**के. जाह्नवी, 10 वर्ष**
तमिलनाडु

**फातिमा आफरा, 12 वर्ष**
तमिलनाडु

## खूबसूरत दुनिया

प्रकृति से हम बहुत प्यार करते हैं, क्योंकि यह बहुत खूबसूरत है. फसलों की बालियां सोने के रंग में डूबी लहलहा रही हैं. झरने सफेद कबूतरों की तरह गोता लगाते दिख रहे हैं. धीरेधीरे बहती छोटी नदियां और खुशबूदार डेजी के फूल से गिरती ओंस की बूंदें, फैलने को तैयार पर्वतपहाड़ बड़े खूबसूरत हैं. प्रकृति की गोद में कोई कभी भी निराश नहीं हो सकता. सुबह की ओंस की सोने की तरह चमकती बूंदें, सूरजमुखी के फूल, ये सब प्रकृति की वे छटाएं हैं जिन्हें हम निहारते हैं. कोई भी रंगों की अस्पष्टता को देख सकता है. नीले रंग में लाल, हरा और पीला रंग मिला हुआ है. हरेक दलदल, झाड़ी, पुराने या नए पहाड़ सब के सब प्रकृति की अद्भुत रचना हैं. मनुष्य की आंखें इन सभी दृश्यों को अपनी आंखों में कैद नहीं कर सकतीं. न सिर्फ ओंस की एक बूंद बल्कि प्रकृति की खूबसूरती सभी की आंखों में बसती है. प्रकृति ही है जो हमें हमेशा स्वस्थ बनाए रखती है.

**अनुषा शुक्ला, 10 वर्ष**
जबलपुर

## मेरा छोटा सा बगीचा

मेरे छोटे से बगीचे में आप पेड़ों को देख सकते हो, जिन पर फल लदे हैं. पत्तों से भरे पौधों को भी देख सकते हो. हर तरफ रंगीन फूल दिखाई देंगे जिन्हें हवा चारों तरफ फैला रही है. हवा में खूबसूरत तितलियां मंडरा रही हैं. ये शाम को मनमोहक और खुशगवार बना रही हैं.

**आर. सहाना, 10 वर्ष**
चैन्नई

**मीर इवान, 8 वर्ष**
कोलकाता

**यह वेलैंटाइन डे ग्रीटिंग कार्ड जिसे हमारी 11 वर्षीय पाठिका नित्या ने बिहार से बना कर भेजा है.**

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

# विश्व पृथ्वी दिवस

**पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है. यहां पर कुछ ऐसी काम बताएं गए हैं जिन्हें कर के आप पृथ्वी की रक्षा कर सकते हैं.**

इस्तेमाल न करने पर लाइट का स्विच औफ कर दें.

जब पानी का उपयोग न हो रहा हो तब नल बंद कर दें.

अपने पेरेंट्स से ताजा भोजन खरीदने को कहें जिसे ज्यादा पैक करने की जरूरत न हो.

नया पैन खरीदने के बजाय उस का रिफिल बदलें.

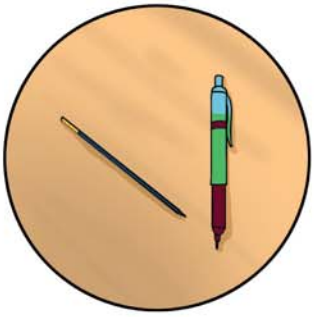

नए कपड़ों की खरीदारी से बचें और पुराने कपड़े किसी जरूरतमंद को दें.

जितना हो सके. वस्तुओं का रिसाइकिल करें.

कम दूरी की यात्रा बजाय कार के पैदल चल कर ही करें.

पेपर का दोबारा यानी रीयूज करें.

पेड़ लगाएं.

अपने पेरेंट्स की अनुमति और उन की मदद से ज्यादा से ज्यादा ग्रीन औरगानाइजेशन के बारे में पता लगाएं, जो आप के इलाके में हैं, उन से वालंटियर के रूप में जुड़ कर काम करें.

# अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

## हमारी और उन की परवरिश

***जन्म के समय से ही हम मनुष्यों का पालनपोषण अपने पेरैंट्स द्वारा होता है. ऐसा तब तक होता है जब तक हम बड़े नहीं हो जाते और स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका नहीं चलाने लग जाते. लेकिन हमारे विपरीत काउबर्ड पक्षियों की एक ऐसी प्रजाति है जो अपने बच्चों का पालनपोषण खुद नहीं करती.***

काउबड्र्स परजीवी पक्षियों का एक सामान्य समूह है. परजीवी का मतलब होता है वह जीव जो दूसरों के प्रयासों और काम पर अपनी जिंदगी जीता है. काउबर्ड परजीवी कहलाता है, क्योंकि वे अपने घोंसले खुद नहीं बनाते हैं और अन्य प्रजातियों के घोंसलों में अपने अंडे देते हैं. ये प्रजातियां इन की मेजबान यानी होस्ट कहलाती हैं.

काउबड्र्स के सामान्य प्रकारों में से एक प्रकार उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है जिस का सिर भूरे रंग का होता है. इन काउबड्र्स के अंडे उन के मेजबानों की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं और मेजबान द्वारा पक्षियों के लाए भोजन का एक बड़ा हिस्सा खा जाते हैं.

बच्चे मेजबान पक्षियों के साथ तब तक जीवन जीते रहते हैं जब तक कि वे भूरे सिर वाले किसी वयस्क काउबर्ड की आवाज नहीं सुन लेते. इस आवाज को सुनने से उन के दिमाग में एक नई ऐक्टिविटी कौंधती है जो उन्हें अपनी प्रजाति के सदस्यों की पहचान करने में मदद करती है और इस के बाद वे उन के साथ उड़ जाते हैं. अपने बच्चों को बुलाने के लिए वयस्क काउबर्ड रात के समय लगातार आवाज निकालता रहता है ताकि बच्चे चुपके से बाहर निकल कर उन के साथ हो लें.

बच्चों को छोटी आयु में अपनी प्रजाति के चहचहाने की आवाज को सुनना जरूरी होता है ताकि वे वयस्कों के साथ उड़ सकें और मेजबान पक्षियों की आदत के शिकार न बन जाएं.

**भूरे सिर वाले काउबर्ड 200 से अधिक दूसरी प्रजाति के पक्षियों के घोंसले में अपने अंडे देते हैं.**

**दिल्ली प्रैस**

अगर आप में लिखने की कला है, कल्पनाओं में रंग भरने की चाहत है, तो

# आप भी भाग ले सकते हैं

चंपक क्रिएटिव चाइल्ड कौंटैस्ट अपने टैलेंट और क्रिएटिविटी को दिखाने का सब से बड़ा और अनोखा मंच है. जिस में 600 से अधिक स्कूलों के 1,00,000 से ज्यादा बच्चे भाग लेंगे.

हम आ रहे हैं आप के शहर, आप के स्कूल में.

**योग्यता :** कक्षा 3 से 8 तक के बच्चे.

**सामग्री :** लिखने एवं कलर करने के लिए सामग्री स्वयं ले कर आएं.
(चित्रकारी के लिए कागज दिए जाएंगे)

पहले राउंड की अच्छी ड्राइंग्स को अगले राउंड के लिए चुना जाएगा. अगर आप की स्टोरी अच्छी होगी, तो उसे चंपक में भी प्रकाशित किया जाएगा. तो तैयार हो जाएं...

## कैसे भाग लें ?

राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अपने स्कूल के टीचर से संपर्क करें.

**सीधे भाग लेने के लिए :**

अगर चंपक आप के स्कूल में नहीं आता, तो भी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं -

● एक ए4 साइज कागज लें. ● **'स्कूल मजेदार है.'** विषय पर एक पोस्टर बनाएं.

● कागज के पीछे इसी विषय पर एक कहानी लिखें. ● कागज पर अपना नाम, उम्र, कक्षा, पता व मोबाइल नंबर जरूर लिखें. ● अपने टीचर या मातापिता से हस्ताक्षर करवाएं और नीचे दिए गए पते पर भेज दें.

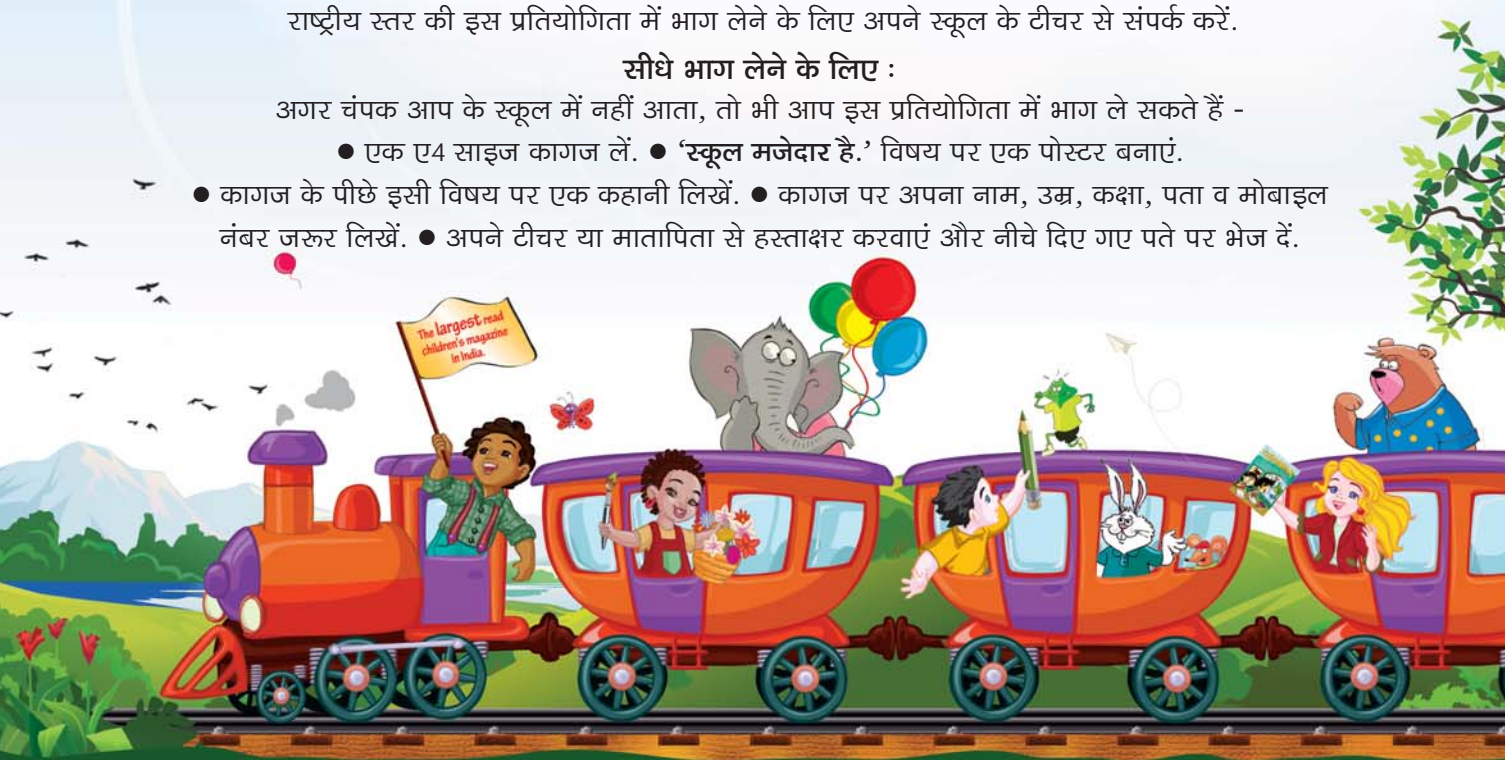


अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 011 - 41398888 हमें इस पते पर लिखें : ए - 4, श्री राम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेदकर मार्ग, वडाला, मुंबई - 400031.

ईमेल करें : writetochampak@delhipress.in जानकारी देखें : www.facebook.com/Champakmagazine

# रिची ने जीता दिल

कहानी ● पूनम मेहता

‘‘रिची...रिची, देखो यहां कौन आया है,’’ मम्मी ने कहा. 5 मिनट बाद तक भी कोई उत्तर नहीं आया. घर पर मेहमान आए थे और रिची से मिलना चाह रहे थे पर वह तो उन का मोबाइल लिए बैडरूम में वीडियो देखने में व्यस्त था.

मां ने गुस्से में फोन स्विच औफ कर दिया. रिची सहमा सा अपनी स्टडी टेबल के सामने बैठ गया. रिची छठी कक्षा का छात्र था. वह पढ़ाई में होशियार होने के साथसाथ डांस भी बढ़िया करता था. उसे कुकिंग का शौक था और वह टीवीरेडियो या इंटरनैट पर सारे कुकरी शोज का देखता रहता था. मां के मोबाइल पर भी उस ने काफी सारी रेसिपीज डाउनलोड कर रखी थीं. कुकिंग उस की हौबी थी.

जब मां घर पर नहीं थी, उस ने नए पकवान बनाए, क्योंकि उसे गैस का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं थी. इसलिए उन्होंने आग के बिना खाना पकाने का काम किया. उस ने माइक्रोवैब और ओवन के टोस्टर ग्रिल का इस्तेमाल कर नए व्यंजन बनाने की कोशिश की.

मां रिची के इस शौक से परेशान थीं. उन्हें लगता था लड़का होते हुए भी यह कैसा शौक पाला हुआ है. वे कभी रिची को नई रेसिपीज बनाने को प्रोत्साहित नहीं करती थीं. मां को एक और शिकायत थी. रिची अकसर उन के फोन की बैटरी खत्म कर देता था. वह अपनी मम्मी के गुस्से से डरता था. रिची डरा सहमा सा पढ़ाई कर के सोने जाता था.

अगले दिन फिर से वही रूटीन शुरू हुआ . होमवर्क और बैडमिंटन से वक्त मिला तो रिची ने नजरें बचा कर फिर से कुकरी शोज टैलीविजन पर देखने लगा.

नईनई चीजों के बारे में जानना कितना दिलचस्प था. शो में हर बार एक ही चीज को नए तरीके से बनाना सिखाया जाता और उस का महत्त्व बताया जाता. कैलोरी कंटैंट भी लिखा हुआ आता. वह उन में ताकतवर चीजें भी मिलाता था.

रिची कुकरी शोज का जितना दीवाना था मां उसे उतना ही शोज से दूर रखने की कोशिश करती. धीरेधीरे एग्जाम का वक्त आ गया.

मां ने टैलीविजन, इंटरनैट सब बंद करवा दिए. अभी मौखिक परीक्षा शुरू हुई थी कि एक शाम पापा ने ऐलान किया उन के कुछ दोस्त खाने पर आ रहे हैं. मम्मी भी दिनभर औफिस के काम से थक जाती थीं इसलिए मां घर पर डिनर नहीं रखना चाहती थीं पर मजबूरी थी. औफिस के ये नए शादीशुदा कपल्स थे जिन्हें घर पर ही दावत देना जरूरी था.

ना ना करतेकरते मां को हां करनी पड़ी. मम्मीपापा को रिची के पढ़ाई का समय खराब होने की चिंता थी सो तय किया गया कि वह मेहमानों के आने पर कमरे से बाहर नहीं आएगा. बस, खाने के वक्त ही उन से मिलेगा. मां ने डिनर का मैन्यू पापा से पूछ कर बनाया.

आखिर डिनर का दिन भी आ गया. सुबह से ही घर की चादरें बदली गई थीं, फ्लावरपौट पर नए फूल लगाए गए थे. सोफे की सेटिंग भी बदली हुई थी.

रिची रात को मिलने वाली अपनी मनपसंद डिशेज के बारे में सोचता हुआ स्कूल गया. मां बहुत अच्छी कुक थीं पर वह कौंटीनैंटल खाना कभीकभार बनाती थीं, लेकिन पापा ने एक रात पहले ही सब्जियां काट दी थीं. इसलिए उसकी मां को हां करनी पड़ी.

स्कूल से लौट कर जब रिची घर पहुचां तो उस ने देखा मां डाइनिंग टेबल पर थकी गुमसुम बैठी थीं. हमेशा दौड़ कर आकर गले मिलने

वाली मां आज उठी नहीं. यह देख कर रिची को आश्चर्य हुआ. उस ने मां के पास जा कर माथे पर हाथ लगा कर उन के देखा, उन्हें बुखार भी नहीं था.

‘‘क्या हुआ मां,’’ घबराए रिची ने पूछा. मां ने जवाब नहीं दिया. बस, चुपचाप रहीं.

मां ने रिची से स्कूल बैग लिया. वह रोंआसी सी थीं. लंच करते वक्त रिची ने किचन की शैल्फ पर बिगड़ा केक पड़ा देखा तो वह समझ गया कि बिजली चले जाने से केक खराब हो गया और मां इसीलिए परेशान सी थीं.

समय न होने के कारण न ही वह दूसरा केक बना सकती थीं और न ही बाजार से केक मंगवाना चाहती थीं. मां ने रिची को खाना खा कर सोने को कहा. अपने कमरे में जातेजाते रिची ने मां से पूछा कि क्या वह उन की कुछ मदद कर सकता है. मां ने एक पल सोचा और फिर हां कह दिया. ‘‘पर तुम कैसे बनाओगे ज्यादा सामान तो घर में नहीं है,’’ मां ने पूछा.

‘‘घर में उपलब्ध सामानों से ही बना लूंगा,’’ रिची ने कहा. पार्टी के लिए ज्यादा समय नहीं बचा था.

रिची ने घर में उपलब्ध बिस्कुट के पैकेट मिक्सी में पीसे और उन्हें छान कर, उस में पिसी चीनी व वनीला एसेंस डाला और कुछ कतरे हुए ड्राइफ्रूट्स भी डाल दिए. अब थोड़ी क्रीम व दूध डाल का उस में मिक्स्चर को फेंटना शुरू किया.

मां रिची के आत्मविश्वास से दंग थी. इतना छोटा बच्चा अपने आप मेहमानों के लिए केक बना रहा था. रिची ने मां को उस मिक्स्चर में एक पैकेट इनो डालने को कहा. इनो डालते ही मिक्स्चर फूल गया. बस, अब बारी थी उसे प्रीहिटेड़ ओवन में 180 डिग्री पर आधा घंटा बेक करने की. मां और रिची को अब इंतजार था केक बनने का. दोनों प्रार्थना कर रहे थे कि लाइट न जाए.

रिची ने इस बीच टेबल लगाने में मां की मदद की. ओवन में से अब केक की भीनी खुशबू आने लगी थी. रिची ने केक बाहर निकाल कर मां को केक पर स्प्रिंकल्स डालने की सलाह दी. मां ने वैसे ही किया.

थोड़ी देर में केक तैयार था. वह दिख भी

अच्छा रहा था और उस से खुशबू भी बढ़िया आ रही थी. मां ने ओवन से निकाल कर उसे ठंडा होने रख दिया. उस की पाक कला के सभी लोग कायल गए.

निश्चित समय पर मेहमान आ गए. सभी ने गेम्स खेला व डांस किया. रिची को पार्टी में बहुत मजा आ रहा था. मेहमानों ने म्यूजिक का आनंद उठाया और खाना भी चाव से खाया. सभी मां के हाथ से बने भोजन की भूरिभूरि तारीफ कर रहे थे. भोजन के बाद बारी आई मीठे की.

मां ने रिची का बनाया केक आइसक्रीम के साथ सर्व किया. मानो गजब हो गया. जिस ने भी केक मुंह में डाला, वह तारीफ करे बगैर न रहा. मां ने सभी को बताया कि केक रिची ने बनाया है और वह भी बहुत जल्दी. सभी ने रिची को बधाई दी. मेहमानों से तारीफ सुन कर रिची ने सभी का दिल जीत लिया था. शौक अगर रचनात्मक हो तो व्यक्तित्व बनता है. मां को अब समझ में आ गया था. ●



# उत्तर पृष्ठ :

**पृष्ठ 8 : रास्ता बताओ :**

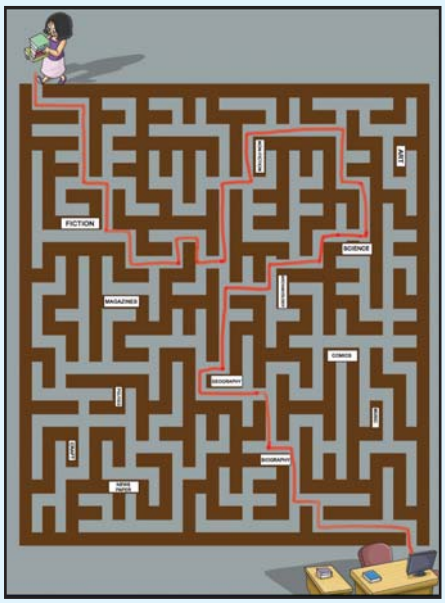

**पृष्ठ 20 : मैथमैटिक मीकू :**

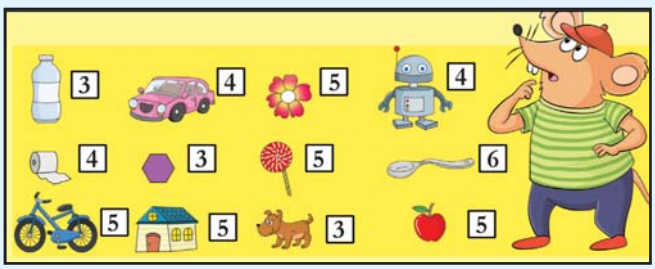


**पृष्ठ 29 : विश्व विरासत दिवस :**

1. ग्रेट हिमालय राष्ट्रीय उद्यान, हिमाचल प्रदेश.
2. जंतरमंतर, जयपुर.
3. नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिमी हिमालय
4. रानी की वाव, गुजरात
5. नालंदा में नालंदा महाविहार पुरातात्त्विक स्थल, बिहार
6. अजंता की गुफाएं, महाराष्ट्र
7. सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिम बंगाल
8. महान जीवंत चोल मंदिर, तमिलनाडु

# WE SPEAK IN 33 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

## BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

**DELHI PRESS**

**To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,**

**E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe**

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2018-20 WPP U(C)148/40/2018-20
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/04/2020. Pgs. 52.

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

# SUNCARE

## स्वास्थ्य का रखे ख्याल
## जीवन रहे खुशहाल

**FLAMISUN®**
GEL & SPRAY
जोड़ो के दर्द में दे
तुरंत आराम

**STOMAFIT**
रखे स्टमक फिट
जिससे पेट रहे सही
और आप रहें फिट

**हेमोकॉल**
आयरन एवं फोलिक ऐसिड
की कमी को दूर कर
खून बढ़ाए

**Suntuss®**
नो खिच-खिच
फार्मूला

**SALTEX®**
LOTION
दाद-खाज़,
खुजली में बेस्ट

ऐंटीसेप्टिक एवं दर्द निवारक जैल
मुँह के छालों का
सफाया

**CLEAR ON XTRA**
With Aloe & Allantoin
एक्ने-पिंपल भगाए,
फेस को क्लीयर बनाए

**Bevitone**
जिएं भरपूर ऊर्जा
के साथ

**Scabicid**
खुजली, जुएं और
डैन्ड्रफ से छुटकारा

**PYROGUM**
TOOTH DROPS
दांतो का डाक्टर
जो करे पूरी देखभाल

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
**सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.**
फोन : 8447977889 / 999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com
www.suncareformulations.com

फ्री होम डिलीवरी
8447977999